RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 275
दि. 06.02.2026,
शुक्रवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

लोकतंत्र की रणभूमि में वाणी की आरती राज्यसभा से उठा सत्ता, संघर्ष और संकल्प का स्वर

(जीएनएस)। नई दिल्ली की संसद केवल ईंट-पत्थरों की इमारत नहीं, बल्कि वह यज्ञशाला है जहाँ राष्ट्र का भविष्य शब्दों की आहुति से गढ़ा जाता है। इसी यज्ञशाला में जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राज्यसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव का उत्तर देने खड़े हुए, तो यह केवल एक संवैधानिक औपचारिकता नहीं थी, बल्कि सत्ता और विपक्ष, आस्था और आक्रोश, दृष्टि और विरोध के बीच एक वैचारिक संग्राम था। विपक्ष के वॉकआउट के बीच 97 मिनट तक चला यह संबोधन किसी साधारण राजनीतिक भाषण से कहीं आगे था—यह आत्मविश्वास, चुनौती और राष्ट्रबोध से भरी एक वैचारिक घोषणा थी। लोकसभा में जिस दिन राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव प्रधानमंत्री के भाषण के बिना पारित हुआ, वह संसदीय इतिहास में एक असामान्य क्षण बन गया। 2004 के बाद पहली बार ऐसा हुआ कि सदन की गरिमा हंगामे की भेंट चढ़ गई। जैसे ही कार्यवाही शुरू हुई, नारेबाजी ने संवाद का स्थान ले लिया। बार-बार स्थगन, बार-बार चेतावनी और अंततः सदन का स्थगित होना—यह दृश्य केवल शोर का नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक धैर्य की परीक्षा का था। कांग्रेस के निलंबित सांसद मणिकम टैगोर का यह कहना कि जब तक राहुल गांधी को बोलने नहीं दिया जाएगा, तब तक प्रधानमंत्री को भी बोलने नहीं दिया जाएगा, राजनीति को शर्तों और जिद की संकीर्ण गलियों में ले जाता दिखा।

लेकिन राज्यसभा में दृश्य भिन्न था। वहाँ प्रधानमंत्री बोले, विपक्ष ने सुना नहीं, बल्कि सुने बिना उठकर चला गया। इस मौन और पलायन के बीच प्रधानमंत्री की वाणी निरंतर बहती रही—मानो एकाकी साधक निर्जन वन में भी मंत्रोच्चार करता रहे। उन्होंने शब्दों को अस्त्र बनाया, लेकिन स्वर में कटुता से अधिक आत्मविश्वास था। राहुल गांधी पर सरनेम चुराने से लेकर 'शातिर युवराज' जैसे तंज तक, यह राजनीति की वह भाषा थी जो समर्थकों को उत्साहित करती है और विरोधियों को असहज। प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में केवल विपक्ष पर प्रहार नहीं किया, बल्कि भारत की बदलती वैश्विक छवि को भी रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि आज दुनिया की विकसित अर्थव्यवस्थाएँ भारत के साथ व्यापारिक समझौते करने को उत्सुक हैं। 27 देशों वाले यूरोपीय संघ के साथ हुए ट्रेड एग्रीमेंट को उन्होंने ऐतिहासिक बताया। यह कथन केवल आर्थिक उपलब्धि का बखान नहीं था, बल्कि उस परिवर्तन का संकेत था जिसमें भारत अब याचक नहीं, साझेदार बन चुका है। उन्होंने पूर्ववर्ती सरकारों पर कटाक्ष करते हुए कहा कि एक समय था जब कोई देश भारत के साथ ट्रेड डील करने को तैयार नहीं था, और आज स्थिति बिल्कुल उलट है। हंगामे के बीच जब विपक्षी सांसद 'नेता

प्रतिपक्ष को बोलने दो' और 'तानाशाही नहीं चलेगी' के नारे लगा रहे थे, तब प्रधानमंत्री ने मल्लिकार्जुन खरगे पर तंज कसते हुए उम्र और संयम का स्मरण कराया। यह तंज व्यक्तिगत हो सकता है, पर इसके पीछे सत्ता का वह आत्मविश्वास झलकता है जो स्वयं को निर्विवाद रूप से मजबूत मानता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि विपक्ष सत्य सुनने की शक्ति खो चुका है, इसलिए वे भाषण शुरू होते ही सदन से निकल गए। यह कथन केवल व्यंग्य नहीं, बल्कि राजनीतिक संवाद के टूटते सेतु पर एक टिप्पणी थी।

विकास की यात्रा पर बोलते हुए प्रधानमंत्री ने 2014 और वर्तमान भारत की तुलना की। उन्होंने कहा कि जो भारत कभी 11वें स्थान पर था, वह अब तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में बढ़ रहा है। यह लक्ष्य केवल आंकड़ों का नहीं, बल्कि आत्मछवि का है। उन्होंने 21वीं सदी के इस दूसरे कालखंड को भारत के लिए निर्णायक बताया और कहा कि देश अब 'Fragile Five' की पहचान से निकलकर ग्लोबल साउथ की सशक्त आवाज बन चुका है। यह कथन उस राष्ट्रीय गौरव को पोषित करता है, जो स्वयं को विश्व पटल पर निर्णायक मानना चाहता है।

प्रधानमंत्री ने इतिहास के पन्नों को पलटते हुए सरदार वल्लभभाई पटेल और नर्मदा बांध का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि जिस परियोजना की कल्पना सरदार पटेल ने की थी, उसका शिलान्यास नेहरू ने किया, लेकिन उसे पूरा करने का अवसर उन्हें मिला। उन्होंने यह भी याद दिलाया कि गुजरात के मुख्यमंत्री रहते हुए उन्हें इस परियोजना के लिए अनशन करना पड़ा था, क्योंकि तत्कालीन केंद्र सरकार बाधाएं डाल रही थी। यह प्रसंग विकास बनाम विलंब, संकल्प बनाम राजनीति की कथा को पुनः जीवित करता है।

वोट बैंक और सुशासन की राजनीति के अंतर को रेखांकित करते हुए प्रधानमंत्री ने कांग्रेस पर तीखा प्रहार किया। उन्होंने असम के बोगीबील ब्रिज का उदाहरण देते हुए कहा कि दशकों तक लटकी यह परियोजना उनकी सरकार ने पूरी की, जिससे पूरे पूर्वोत्तर को कनेक्टिविटी का लाभ मिला। यह कथन उस राजनीतिक दर्शन को पुष्ट करता है जिसमें 'काम' को 'कथन' से ऊपर रखा जाता है।

बैंकिंग सुधारों का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने एनपीए के 'पहाड़' को समाप्त करने का दावा किया और कहा कि आज एनपीए एक प्रतिशत से भी नीचे है। पीएसयू को लेकर विपक्ष के आरोपों को उन्होंने 'शहरी नक्सली सोच' करार दिया और कहा कि जो कंपनियाँ कभी घाटे में थीं, वे आज रिकॉर्ड मुनाफा कमा रही हैं। यह भाषण का वह हिस्सा था जहाँ अर्थशास्त्र और राजनीति एक-दूसरे में घुलते दिखे।

जनसंख्या को लेकर प्रधानमंत्री का दृष्टिकोण भी उनके भाषण का अहम हिस्सा रहा। उन्होंने नेहरू और इंदिरा गांधी के पुराने बयानों का हवाला देते हुए कहा कि उनके लिए जनसंख्या समस्या थी, जबकि उनकी सरकार के लिए 140 करोड़ भारतीय सामर्थ्य हैं। उन्होंने कहा कि जहाँ दुनिया के अमीर देश बूढ़े हो रहे हैं, वहीं भारत अपनी युवा आबादी के कारण और अधिक ऊर्जावान हो रहा है। यह कथन युवा शक्ति को साधन और साध्य दोनों के रूप में देखने की सोच को उजागर करता है।

वांगचुक मामले में सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई 9 फरवरी तक टाली, हिरासत पर फिलहाल कोई राहत नहीं

(जीएनएस)। नई दिल्ली। जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक की हिरासत को चुनौती देने वाली याचिका पर सुप्रीम कोर्ट में होने वाली सुनवाई फिलहाल टल गई है। अदालत ने वांगचुक की पत्नी गीतांजलि जे. अंगमो द्वारा दायर याचिका पर अगली सुनवाई की तारीख 9 फरवरी तय की है। इस मामले की सुनवाई न्यायमूर्ति अरविंद कुमार और न्यायमूर्ति पी. बी. वराले की पीठ कर रही है। याचिका में सोनम वांगचुक की हिरासत को अवैध बताते हुए उनकी तत्काल रिहाई की मांग की गई है, साथ ही उनकी बिगड़ती स्वास्थ्य स्थिति को भी प्रमुख आधार बनाया गया है।

इससे पहले हुई सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार से स्पष्ट सवाल किया था कि क्या वांगचुक की सेहत को देखते हुए उनकी हिरासत पर दोबारा विचार किया जा सकता है। अदालत ने यह भी संकेत दिया था कि हिरासत में रखे गए व्यक्ति की स्वास्थ्य स्थिति एक गंभीर मानवीय मुद्दा है, जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। हालांकि, इस पर केंद्र सरकार की ओर से कोई ठोस आश्वासन नहीं दिया

गया। अब सुनवाई स्थगित होने के बाद वांगचुक को फिलहाल कोई अंतरिम राहत नहीं मिल पाई है, जिससे उनके समर्थकों और परिवार की चिंताएं और बढ़ गई हैं।

सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार और लद्दाख प्रशासन ने वांगचुक की हिरासत का जोरदार बचाव किया। अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ने अदालत के समक्ष दलील दी कि सोनम वांगचुक की गतिविधियां केवल शांतिपूर्ण आंदोलन तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि उन्होंने लोगों को उकसाने का काम किया, जिससे क्षेत्र में हिंसा और अशांति फैलने की स्थिति बनी। सरकार का आरोप है कि पिछले वर्ष लेह में हुई हिंसक घटनाओं में वांगचुक की भूमिका रही, जिनमें चार लोगों की मौत हुई थी और 161 से अधिक लोग घायल हुए थे। केंद्र का कहना है कि सीमावर्ती और संवेदनशील क्षेत्र में कानून-व्यवस्था बनाए रखना सर्वोच्च प्राथमिकता है और इसी वजह से वांगचुक को हिरासत में लिया गया।

लद्दाख प्रशासन ने भी अदालत में यह रुख अपनाया कि वांगचुक की गतिविधियां क्षेत्र की शांति और सुरक्षा के लिए खतरा बन सकती हैं। प्रशासन का तर्क है कि उनके आंदोलनों और बयानों से स्थानीय लोगों में असंतोष बढ़ा, जिसके चलते हालात बिगड़ने की आशंका पैदा हुई। इसी आधार पर हिरासत को जरूरी और वैध बताया गया। सरकार की ओर से यह भी कहा गया कि मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए किसी तरह की ढील देना फिलहाल उचित नहीं होगा।

दूसरी ओर, याचिकाकर्ता की ओर से यह दलील दी गई कि सोनम वांगचुक एक पर्यावरण कार्यकर्ता और सामाजिक चिंतक हैं, जिन्होंने हमेशा अहिंसक तरीके से अपनी बात रखी है। उनकी हिरासत को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और शांतिपूर्ण विरोध के अधिकार का उल्लंघन बताया गया। साथ ही, वकीलों ने वांगचुक की स्वास्थ्य स्थिति का हवाला देते हुए कहा कि हिरासत में उनकी तबीयत लगातार बिगड़ रही है और यह उनके जीवन के लिए खतरा बन सकता है।

सुनवाई टलने के बाद यह मामला अब और राजनीतिक व सामाजिक बहस का विषय बन गया है। पर्यावरण कार्यकर्ताओं और नागरिक संगठनों की नजरें सुप्रीम कोर्ट की अगली सुनवाई पर टिकी हैं, जहां यह तय होगा कि अदालत हिरासत को लेकर क्या रुख अपनाती है। फिलहाल, 9 फरवरी तक का इंतजार वांगचुक और उनके समर्थकों के लिए चिंता और अनिश्चितता से भरा हुआ है।

बीजापुर के जंगलों में सुरक्षाबलों की बड़ी कार्रवाई, मुठभेड़ में एक नक्सली ढेर

(जीएनएस)। बीजापुर। छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित बीजापुर जिले में गुरुवार सुबह सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच हुई मुठभेड़ में एक नक्सली मारा गया। यह मुठभेड़ जिले के दक्षिणी हिस्से के घने जंगलों में उस समय हुई, जब सुरक्षाबलों की संयुक्त टीम नक्सल विरोधी अभियान के तहत इलाके में सर्च ऑपरेशन पर निकली हुई थी। पुलिस अधिकारियों के मुताबिक सुबह करीब साढ़े सात बजे अचानक नक्सलियों ने सुरक्षाबलों पर फायरिंग शुरू कर दी, जिसके बाद दोनों ओर से जवाबी कार्रवाई हुई।

करीब आधे घंटे तक चली इस मुठभेड़ के बाद सुरक्षाबलों ने इलाके पर नियंत्रण हासिल कर लिया। तलाशी अभियान के दौरान घटनास्थल से एक नक्सली का शव बरामद किया गया, जिसकी पहचान की प्रक्रिया जारी है। मौके से एक अत्याधुनिक एके-47 राइफल भी बरामद की गई है, जिससे यह संकेत मिलता है कि मारा गया नक्सली संगठन में सक्रिय और हथियारबंद था। सुरक्षाबलों ने पूरे इलाके को घेरकर सर्च ऑपरेशन तेज कर दिया है, क्योंकि आशंका जताई जा रही है कि अन्य

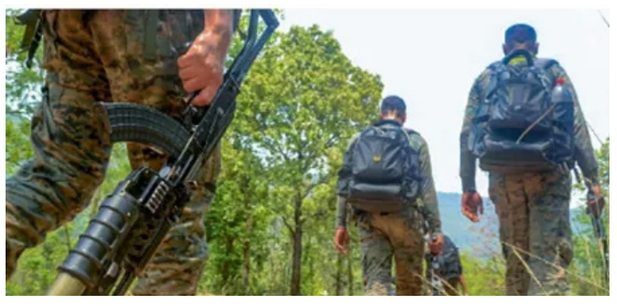

नक्सली आसपास के जंगलों में छिपे हो सकते हैं।

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि मुठभेड़ के बाद भी क्षेत्र में एहतियातन तलाशी अभियान जारी है। जंगलों और पहाड़ी इलाकों में रुक-रुक कर फायरिंग की आवाजें सुनाई दी हैं, हालांकि किसी अतिरिक्त नुकसान की सूचना नहीं है। ऑपरेशन पूरी तरह समाप्त होने के बाद ही विस्तृत जानकारी साझा की जाएगी। सुरक्षा कारणों से फिलहाल इलाके में अतिरिक्त बल तैनात कर दिया गया है।

इस ताजा कार्रवाई के साथ ही छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान की तीव्रता एक बार फिर सामने आई है। राज्य में इस वर्ष अब तक कुल 23 नक्सली मारे जा चुके हैं। केंद्र और राज्य सरकार की ओर से नक्सलवाद के समूल उन्मूलन के लिए सुरक्षा बलों को स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं, जिसके तहत सघन सर्च ऑपरेशन और खुफिया सूचनाओं के आधार पर लक्षित कार्रवाई की जा रही है। अधिकारियों का कहना है कि बीजापुर, दंतेवाड़ा, सुकमा और नारायणपुर जैसे जिले अब भी नक्सल गतिविधियों के लिहाज से संवेदनशील बने हुए हैं, लेकिन सुरक्षाबलों की लगातार मौजूदगी से नक्सलियों पर दबाव बढ़ा है।

गौरतलब है कि पिछले वर्ष छत्तीसगढ़ में नक्सल विरोधी अभियानों के दौरान रिकॉर्ड 285 नक्सली मारे गए थे। इस वर्ष की शुरुआत भी सुरक्षाबलों की सख्त कार्रवाई के साथ हुई थी। तीन जनवरी को बस्तर क्षेत्र में हुई एक बड़ी मुठभेड़ में 14 नक्सलियों को ढेर किया गया था, जिसे सुरक्षा बलों की बड़ी सफलता माना गया। सरकार की ओर से यह साफ किया गया है कि देश से वामपंथी उग्रवाद को समाप्त करने के लिए 31 मार्च की समयसीमा तय की गई है और उसी के अनुरूप अभियान को लगातार तेज किया जा रहा है।

बीजापुर की इस ताजा मुठभेड़ को उसी रणनीति का हिस्सा माना जा रहा है। सुरक्षा एजेंसियों का मानना है कि लगातार दबाव, हथियारों की बरामदगी और कैडर के नुकसान से नक्सली संगठनों की ताकत कमजोर हो रही है। आने वाले दिनों में भी नक्सल प्रभावित इलाकों में इसी तरह के अभियान जारी रहने की संभावना है।

भारत–म्यांमार सीमा पर बाड़ के मुद्दे पर मिजोरम का दो टूक रुख, कैबिनेट ने एक बार फिर जताया विरोध

(जीएनएस)। आइजोल। मिजोरम सरकार ने भारत–म्यांमार सीमा पर बाड़ लगाने की केंद्र सरकार की प्रस्तावित योजना के खिलाफ अपना विरोध एक बार फिर दोहराया है। मुख्यमंत्री लालदुहोमा की अध्यक्षता में हुई राज्य कैबिनेट की बैठक में इस मुद्दे पर विस्तार से चर्चा की गई और सर्वसम्मति से यह स्पष्ट किया गया कि राज्य सरकार इस फैसले के पक्ष में नहीं है। कैबिनेट ने माना कि सीमा सुरक्षा देश के लिए अहम विषय है, लेकिन साथ ही यह भी रेखांकित किया कि मिजोरम की भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियां इस योजना को जटिल बनाती हैं। मिजोरम और म्यांमार के बीच लगभग 510 किलोमीटर लंबी अंतरराष्ट्रीय सीमा है, जो पहाड़ी और घने जंगलों से होकर गुजरती है। इस सीमा के दोनों ओर एक ही जातीय समूह के लोग, विशेष रूप से चिन समुदाय, पीढ़ियों से बसे हुए हैं। इन समुदायों के बीच पारिवारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संबंध इतने गहरे हैं कि सीमा रेखा उनके दैनिक जीवन में कभी वास्तविक दीवार की तरह नहीं रही। मिजोरम सरकार का मानना है कि बाड़ लगाने से इन पारंपरिक रिश्तों पर सीधा असर पड़ेगा और लोगों की आवाजाही, सामाजिक मेलजोल तथा पारिवारिक संपर्क बाधित होंगे।

राज्य के कई प्रभावशाली सामाजिक संगठनों और चर्च संस्थाओं ने भी इस प्रस्ताव का विरोध किया है। उनका तर्क है कि म्यांमार में राजनीतिक अस्थिरता और संघर्ष के चलते पहले ही बड़ी संख्या में चिन समुदाय के लोग मिजोरम में शरण ले चुके हैं। ऐसे में सीमा पर बाड़ लगाने से मानवीय संकट और गहरा सकता है। मिजोरम सरकार का कहना है कि यह केवल सुरक्षा का मामला नहीं, बल्कि मानवीय और सांस्कृतिक संवेदनशीलता से जुड़ा विषय भी है, जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

कैबिनेट बैठक के बाद सरकार की ओर से यह भी स्वीकार किया गया कि संवैधानिक रूप से अंतरराष्ट्रीय सीमा से जुड़े फैसले लेने का अधिकार केंद्र सरकार के पास है और राज्य सरकार के पास इस कदम को कानूनी तौर पर रोकने का कोई अधिकार नहीं है। इसके बावजूद मिजोरम सरकार ने स्पष्ट किया कि वह लोकतांत्रिक और संवैधानिक दायरे में रहते हुए अपनी आपत्ति और चिंताओं को केंद्र के सामने लगातार रखती रहेगी। राज्य सरकार चाहती है कि केंद्र सरकार इस क्षेत्र की विशिष्ट परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए कोई वैकल्पिक व्यवस्था या लचीला समाधान तलाशे।

मुख्यमंत्री लालदुहोमा ने बैठक के दौरान यह भी कहा कि मिजोरम हमेशा से देश की एकता और अखंडता के साथ खड़ा रहा है, लेकिन स्थानीय लोगों की भावनाओं और जमीनी हकीकत को नजरअंदाज कर कोई भी फैसला लंबे समय में समस्याएं पैदा कर सकता है। उनका कहना था कि सीमा प्रबंधन के लिए तकनीक आधारित निगरानी, स्थानीय समुदायों की भागीदारी और पारंपरिक व्यवस्थाओं को मजबूत करने जैसे विकल्पों पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए। इस मुद्दे पर मिजोरम का रुख पहले भी स्पष्ट रहा है और राज्य विधानसभा तथा विभिन्न मंचों पर इसका विरोध दर्ज कराया जा चुका है।

वैश्विक एआई नीति में भारत की सशक्त मौजूदगी

(जीएनएस)। संयुक्त राष्ट्र की पहल पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी एआई के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण वैश्विक कदम उठाया गया है, जिसमें भारत की भूमिका भी मजबूती से सामने आई है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटारेस ने एआई पर गठित उच्चस्तरीय वैज्ञानिक पैनल के लिए दुनिया भर से 40 प्रतिष्ठित विशेषज्ञों का चयन किया है। इस सूची में भारत से आईआईटी मद्रास के वरिष्ठ प्रोफेसर बालारमन रविंद्रन को शामिल किया गया है, जिसे न केवल भारतीय वैज्ञानिक समुदाय के लिए बल्कि देश के लिए भी बड़ी उपलब्धि माना जा रहा है।

यह वैज्ञानिक पैनल एआई के तेजी से बढ़ते प्रभाव, इसके सामाजिक, आर्थिक और नैतिक पहलुओं पर वैश्विक स्तर पर मार्गदर्शन देने का काम करेगा। संयुक्त राष्ट्र महासभा के समक्ष गुटारेस ने इन 40 विशेषज्ञों की सूची प्रस्तुत करते हुए कहा कि यह समिति इस बात को सुनिश्चित करने में अहम भूमिका निभाएगी कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विकास और उपयोग मानवता के व्यापक हित में हो। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि दुनिया आज जिस तकनीकी मोड़ पर खड़ी है, वहां यह जरूरी हो गया है कि एआई केवल कुछ चुनिंदा लोगों या देशों तक सीमित न रहे, बल्कि इसका लाभ पूरी मानवता तक पहुंचे।

इस पैनल में शामिल प्रोफेसर बालारमन रविंद्रन वर्तमान में आईआईटी मद्रास में डाटा साइंस और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विभाग के प्रमुख हैं। इसके साथ ही वे वर्ल्ड स्किल्स एकेडमी ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रॉबर्ट बॉश सेंटर फॉर डाटा साइंस एंड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सेंटर फॉर एक्सीलेंस इन रिस्पॉन्सिबल एआई जैसे महत्वपूर्ण संस्थानों का भी नेतृत्व कर रहे हैं। एआई के क्षेत्र में उनका शोध और योगदान न केवल तकनीकी विकास तक सीमित है, बल्कि जिम्मेदार और नैतिक एआई के निर्माण पर भी केंद्रित रहा है। यही वजह है कि उन्हें इस वैश्विक समिति में शामिल किया गया है।

संयुक्त राष्ट्र का यह कदम ऐसे समय में सामने आया है, जब एआई का प्रभाव शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सुरक्षा और शासन व्यवस्था जैसे लगभग हर क्षेत्र में तेजी से बढ़ रहा है। एक ओर एआई को भविष्य की सबसे बड़ी ताकत माना जा रहा है, तो दूसरी ओर इसके दुरुपयोग, निजता के उल्लंघन और सामाजिक असमानता बढ़ने जैसी चिंताएं भी सामने आ रही हैं। ऐसे में इस वैज्ञानिक पैनल की भूमिका बेहद अहम मानी जा रही है, जो नीति निर्धारण से लेकर वैश्विक दिशा तय करने तक में मार्गदर्शक का काम करेगा।

भारत की इस समिति में भागीदारी यह दर्शाती है कि देश अब केवल तकनीक का उपभोक्ता नहीं, बल्कि वैश्विक तकनीकी नीतियों को दिशा देने वाला अहम भागीदार बन चुका है। आईआईटी मद्रास जैसे संस्थान लंबे समय से विश्वस्तरीय शोध और नवाचार के लिए जाने जाते हैं और प्रोफेसर बालारमन रविंद्रन का चयन उसी परंपरा को आगे बढ़ाने वाला कदम माना जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि उनकी मौजूदगी से एआई के मानवीय, समावेशी और जिम्मेदार उपयोग को लेकर भारत की सोच वैश्विक मंच पर मजबूती से रखी जा सकेगी।

महासचिव गुटारेस ने यह भी कहा कि यह समिति केवल तकनीकी सलाह देने तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि सरकारों, निजी क्षेत्र और नागरिक समाज के बीच संतुलन बनाने में भी मदद करेगी। उनका जोर इस बात पर था कि एआई का विकास ऐसा हो, जिससे मानव गरिमा, समानता और न्याय जैसे मूल्यों की रक्षा हो सके। इस संदर्भ में भारत जैसे लोकतांत्रिक और विविधतापूर्ण देश की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

संपादकीय

गम देने वाला गेम

ऑनलाइन गेमिंग के भ्रमजाल में फंसकर, उसे हकीकत मानकर जीने वाले किशोरवय जरा से विचलन से आत्मघात की राह पकड़ना अंतिम समाधान समझ लेते हैं। धीरे-धीरे किशोरवय को अपने चपेट में लेने वाली यह प्रवृत्ति कितनी घातक हो सकती है, उसका उदाहरण बुधवार को घटी दो भयावह घटनाएं हैं। एक हृदयविदारक घटना में गाजियाबाद की तीन अल्पवयस्क बहनों ने नौवीं मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर ली। ऑनलाइन कोरियन गेम की दीवानी बहनें कोरिया में जाकर बसने और वहीं नया जीवन शुरू करने का सपना देखती थीं। घर वालों ने जब उनकी ऑनलाइन सनक से परेशान होकर उनसे मोबाइल छीन लिए, तो वे तनाव व अवसाद में घिर गई। फिर तीनों बहनों ने नौवीं मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर ली। ऐसी ही घटना हिमाचल प्रदेश के कुल्लू में भी घटी जहां एक पंद्रह वर्षीय किशोर ने ऑनलाइन गेम के अपने एक विदेशी साथी के बिछुड़ने के गम में घर में आत्महत्या कर ली। किशोर दसवीं का छात्र था। इन घटनाओं ने आम जनमानस को झकझोर कर रख दिया और बच्चों को लेकर फिक्र बढ़ा दी। निस्संदेह, ये आत्मघात की घटनाएं, ऑनलाइन गतिविधियों के अतिरेक से मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले घातक प्रभाव को लेकर गंभीर सवालों को जन्म देती हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि गाजियाबाद में 12, 14 और 16 साल की तीन सुकोमल बहनें असमय काल-कवलित हो गईं। पुलिस भी प्रथम दृष्टया मान रही है कि इस दुखद घटना के पीछे ऑनलाइन गेमिंग ऐप का अत्यधिक उपयोग और घर में इसके इस्तेमाल को लेकर हुआ विवाद था। वहीं दूसरी ओर जांच अधिकारी अंतिम निष्कर्ष तक पहुंचने से पहले पारिवारिक परिस्थितियों और मनोवैज्ञानिक स्थिति सहित सभी पहलुओं की जांच कर रहे हैं। इसी तरह कल्लू की घटना भी विचलित करने वाली है। जहां विदेश में रहने वाले एक ऑनलाइन गेमिंग मित्र के साथ संपर्क टूट जाने के बाद अत्याधिक मानसिक व्याकुलता से ग्रस्त पंद्रह वर्षीय छात्र ने आत्महत्या कर ली। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

निश्चित रूप से आत्मघात की ये घटनाएं हमारे नीति-नियंताओं और अभिभावकों को आसन्न संकट के प्रति सचेत करती हैं। दरअसल,ये दुखद घटनाएं एक घातक प्रवृत्ति को ही उजागर करती हैं कि गेमिंग और डिजिटल संपर्क लाखों युवाओं को आभासी समुदाय और मनोरंजन तो प्रदान कर सकते हैं, लेकिन साथ ही ये भावनात्मक कमजोरियों,सामाजिक अलगाव और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों की पूर्ति न होने जैसी समस्याओं को भी जन्म दे सकते हैं। हालांकि, वहीं दूसरी ओर समाज विज्ञानी इस बात पर भी बल देते हैं कि केवल गेमिंग या ऑनलाइन मित्रता ही आत्महत्या का कारण नहीं बन सकती हैं। निस्संदेह, आत्महत्या एक जटिल और बहुआयामी घटना है। लेकिन समस्याग्रस्त डिजिटल जुड़ाव, विशेष रूप से जब यह ऑफलाइन जीवन से अलगाव, बाधित शिक्षा और तीव्र भावनात्मक तनाव के साथ होता है तो संवेदनशील युवा मन में परेशानी को और बढ़ा सकता है। निस्संदेह, इन दुखद घटनाओं के सामने आने के बाद डिजिटल युग में किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य को लेकर गंभीर चर्चा होनी चाहिए। इन त्रासदियों को टालने हेतु तात्कालिक प्रतिक्रियाओं की आवश्यकता महसूस की जा रही है। इसके लिये जरूरी है कि माता-पिता को भी डिजिटल जागरूकता प्रदान की जाए। स्कूलों में मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने तथा किशोरों के लिये मनोवैज्ञानिक परामर्श उपलब्ध कराना सुनिश्चित करने की जरूरत है। वक्त की दरकार है कि परिवारों के भीतर खुले संवाद को बढ़ावा दिया जाए। जिससे बच्चे किसी संकट में फंसने से पहले अपनी बात अपने परिवार से कह सकें। गंभीर मानसिक तनाव से गुजर रहे बच्चों को संवेदनशील ढंग से सुना जाना चाहिए। नीति-नियंताओं को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि ऑनलाइन वातावरण नाबालिगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने को प्राथमिकता दे। आस्ट्रेलिया और फ्रांस जैसे विकसित देशों ने किशोरवय को कथित सोशल मीडिया के संजाल से बचाने के लिये एक उम्र तक उनके सोशल मीडिया अकाउंट खोलने पर प्रतिबंध लगाया है। दरअसल, सोशल मीडिया व अन्य इंटरनेट प्लेटफॉर्मों पर इतनी घातक व भ्रामक सूचनाएं प्रसारित की जा रही हैं कि वे बच्चों के सुकोमल मस्तिष्क पर घातक असर डाल सकती हैं।

ट्रेड डील पर अमेरिकी किसान लॉबी का दबाव

> अब अमेरिकी किसान भारत में हुए टैरिफ डील से थोड़ी राहत महसूस कर रहे हैं। इस साल अमेरिका में मध्यावधि चुनाव है, किसानों का गुस्सा शांत नहीं हुआ तो ट्रंप के सारे किये-कराये पर पानी फिर जायेगा।

दिसंबर, 2025 के पहले हफ्ते की खबर जिन्हें याद नहीं, वो दोबारा से उसका स्मरण कर लें, जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने अमेरिका-चीन व्यापार तनाव में फंसे किसानों की सहायता के लिए लंबे समय से प्रतीक्षित 12 अरब अमेरिकी डॉलर के कृषि सहायता पैकेज की घोषणा की थी। इलिनोइस के सोयाबीन किसान जॉन बार्टमैन ने कहा था, कि यह सहायता 'ऊंट के मुंह में जीरा' के समान है। लेकिन, अब अमेरिकी किसान भारत में हुए टैरिफ डील से थोड़ी राहत महसूस कर रहे हैं। इस साल अमेरिका में मध्यावधि चुनाव है, किसानों का ग़ुस्सा शांत नहीं हुआ, तो सारे किये-कराये पर पानी फिर जायेगा। यह महत्वपूर्ण चुनाव अभी 10 महीने दूर है, और असली प्रचार अभियान अगले महीने शुरू होगा, जब राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प अपना संबोधन देंगे।

मिडटर्म चुनाव नवंबर में राष्ट्रपति के कार्यकाल के बीच में होते हैं, और इनका नतीजा आमतौर पर यह होता है कि राष्ट्रपति की पार्टी अमेरिकी कांग्रेस में अपनी पकड़ खो देती है। पिछले 23 मिडटर्म चुनावों में, राष्ट्रपति की पार्टी ने हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स में औसतन 27 सीटें और सीनेट में तीन सीटें गंवाई हैं। सिर्फ़ दो बार ही राष्ट्रपति की पार्टी दोनों सदनों में सीटें जीत पाई है।

इसके दो कारण होते हैं। पहला, जो पार्टी सत्ता में नहीं होती इस मामले में, डेमोक्रेटिक पार्टी और उसके समर्थक आमतौर पर ज़्यादा वोटिंग करवाने के लिए मोटिवेटेड होते हैं। दूसरा, राष्ट्रपति की अप्रूवल रेटिंग आमतौर पर ओवल ऑफिस के पहले दो वर्षों में कम हो जाती है, जैसा कि ट्रंप के साथ हुआ है, जो स्विंग वोटर्स और निराश वोटर्स को प्रभावित कर सकता है। वाशिंगटन डीसी स्थित कैपिटल ग्रुप के पोलिटिकल इकोनॉमिस्ट, मैट मिलर बताते हैं, 'रिपब्लिकन अभी सीनेट और हाउस दोनों पर बहुत कम अंतर से कंट्रोल रखते हैं। किसी भी सदन को खोने से अगले दो सालों में रिपब्लिकन द्वारा लाए गए किसी भी बड़े कानून को पास करने का कोई भी मौका खत्म हो जाएगा, और यह ट्रंप को उनके बाकी कार्यकाल के लिए डिफेंसिव मोड में डाल देगा।' 'कैपिटल ग्रुप' का काम वित्तीय परामर्श सेवाएं प्रदान करना है। उसके पास विगत 90 वर्षों का डाटा उपलब्ध है।

भारत और चीन की तरह, अमेरिका भी कृषि प्रधान देश है। इस वजह से कृषि पैदावारों के निर्यात ने एक ताक़तवर किसान लॉबी खड़ी कर दी है। पिछले तीन दशकों में संयुक्त राज्य अमेरिका में कृषि भूमि के उपयोग में विविधता आई है, लेकिन मक्का, सोयाबीन, घास, गेहूं, कपास, ज्वार, जौ और चावल का दबदबा बाज़ार में बरक़रार है। सोयाबीन, अमेरिका का नंबर वन कृषि उत्पाद है, जिसकी पैदावार 119.05 मिलियन मीट्रिक टन बताते हैं। लेकिन हाल ही में ब्राजील ने लगभग 123.6 मिलियन टन उत्पादन के साथ अमेरिका को पीछे छोड़ दिया है। उसकी वजह ट्रम्प की नीतियां रही हैं। अमेरिका, 53.85 मिलियन मीट्रिक टन गेहूं का उत्पादन करता है, जो दुनिया भर में चौथे स्थान पर है। संयुक्त राज्य अमेरिका एक ग्लोबल एग्रीकल्चरल पावरहाउस है, जो बड़ी मात्रा में फसलें और पशुधन पैदा करने के लिए एडवांस्ड मशीनीकृत खेती का इस्तेमाल करता है। अमेरिकी कृषि क्षेत्र की खासियत ज़्यादा पैदावार है, जिसमें कई तरह के फल और सब्जियां भी शामिल हैं।

मक्का और सोयाबीन अमेरिका की दो सबसे बड़ी फसलें, और खेती की रीढ़ हैं। विगत डेढ़ वर्षों से इन दो फसलों को उगाने वाले किसानों को कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। मौसम में बदलाव, बढ़ते ऑपरेटिंग खर्च और कम अंतरराष्ट्रीय मांग, जो काफी हद तक टैरिफ के रूप में सरकारी नीति के कारण हैं, ने एक मुश्किल हालात पैदा कर दिए हैं। ट्रम्प प्रशासन संख्या नहीं बताता, मगर स्वीकार करता है, कि अमेरिकी किसानों में आत्महत्या की दर राष्ट्रीय स्तर से 3.5 गुना बढ़ी है।

वर्ष 2023-24 में, चीन ने 13.2 अरब डॉलर के 24.9 मिलियन मीट्रिक टन सोयाबीन अमेरिका से खरीदा था, जिनका इस्तेमाल मुख्य रूप से अपने 427 मिलियन सूअरों के झुंड को खिलाने के लिए किया गया। अमेरिकी किसानों का दूसरा सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय सोयाबीन बाज़ार, मेक्सिको है। 2017 में ट्रम्प ने पहली बार टैरिफ लगाए थे, तब से फसल किसान सोयाबीन और मक्का निर्यात के लिए महत्वपूर्ण चीनी बाज़ार में गिरावट से जूझ रहे हैं।

एग्रो इकोनॉमिक्स की समझ रखने वाले ब्रायन हार्बेज बोलते हैं, 'पिछले महीने रिपोर्ट आई कि सोयाबीन का निर्यात 20 साल के निचले स्तर पर पहुंच गया है। यह अमेरिकी किसानों के लिए बहुत बुरा है। अगर हम निर्यात नहीं कर सकते, तो स्टोरेज एक बड़ी समस्या है, हमारी फसल भी खराब होती है। यह दोहरी मार है। वित्तीय चुनौतियों के बावजूद, कई लोग अमेरिकी राष्ट्रवाद के नाम पर अभी भी ट्रंप का समर्थन कर रहे हैं।'

हालांकि, चीन ने 2034 तक अपने घरेलू सोयाबीन उत्पादन को 38 प्रतिशत बढ़ाने का वादा किया है। यह सूचना अमेरिकी सोयाबीन उत्पादकों के लिए सुखद नहीं है। इसलिए, भारत जैसे वैकल्पिक बाज़ार की तलाश में ट्रम्प प्रशासन लग चुका है। भारत में लगभग 13.05 मिलियन टन सोयाबीन का उत्पादन होता है, जिसमें से आधे से ज़्यादा उत्पादन अकेले मध्य प्रदेश में होता है। भारत में मक्के का उत्पादन लगभग 42 मिलियन टन है, जिसका 20 प्रतिशत फ्यूल-ग्रेड इथेनॉल बनाने में इस्तेमाल होता है। देश मक्के के उत्पादन में आत्मनिर्भर है, लेकिन खाने के तेल के लिए प्रोसेसिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी के कारण खाना पकाने के लिए सोया तेल आयात करता है।

सोयाबीन प्रोसेसर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अनुसार, 'मौजूदा ऑयल ईयर 2025 -26 के लिए कुल सोयाबीन की उपलब्धता 110.02 लाख टन होने का अनुमान है, जबकि 2024-25 में 134.76 लाख टन थी।' चुनांचे, कोई 6 लाख मीट्रिक टन सोयाबीन के आयात की ज़रूरत भारत को पड़ेगी। भारत मुख्य रूप से अर्जेंटीना और ब्राजील से सोयाबीन तेल इंपोर्ट करता है। इसके अलावा रशियन फेडरेशन, पैराग्वे और यूक्रेन से भी सोया आयल इंपोर्ट किया जाता है। भारत सोयाबीन के बीज इथियोपिया, बेनिन, टोगो, मोज़ाम्बिक और जिबूती से आयात करता है। तो क्या अब सोया आयात का बड़ा हिस्सा अमेरिका से हुआ करेगा?

सब्सिडी के मामले में हमारे किसान कहीं से अमेरिकी व यूरोपीय किसानों का मुकाबला नहीं कर सकते। उन्हें डर है कि कुछ ही वर्षों में ये पूरा कृषि बाज़ार हथिया लेंगे। भारत में एक किसान आमतौर पर 1 एकड़ ज़मीन में लगभग 1 मीट्रिक टन सोयाबीन पैदा करता है। लेकिन उतनी ही ज़मीन पर जीएम सोयाबीन की पैदावार 3 मीट्रिक टन तक हो सकती है। भारतीय किसानों के लिए जीएम (जेनेटिकली मॉडिफाइड) फसलें एक अलग चिंता का सबब है।

प्रेरणा

एक प्रश्न जिसने झुका दिया शिखर को: अद्वैत का जीवित सत्य

भारतीय दर्शन के इतिहास में कुछ क्षण ऐसे हैं जो समय की धारा को मोड़ देते हैं। वे केवल किसी महापुरुष की जीवनी का हिस्सा नहीं रहते, बल्कि मानव चेतना के लिए दर्पण बन जाते हैं। आदि शंकराचार्य और काशी के चांडाल की भेंट ऐसा ही एक क्षण है। यह कथा किसी चमत्कार या अलौकिक घटना की नहीं, बल्कि उस साहस की है जिसमें एक महान आचार्य अपने ही सिद्धांतों की कसौटी पर स्वयं को परखने से पीछे नहीं हटता। यही कारण है कि यह प्रसंग आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना अपने समय में था।

आदि शंकराचार्य को अद्वैत वेदांत का पुनर्स्थापक कहा जाता है। उनका दर्शन यह घोषणा करता है कि ब्रह्म एक है, वही सत्य है और वही समस्त जगत में व्याप्त है। आत्मा और परमात्मा में कोई वास्तविक भेद नहीं है, भेद केवल अज्ञान का परिणाम है। यह विचार सुनने में अत्यंत उदात्त लगता है, परंतु इसे जीवन में उतारना साधारण नहीं है। शंकराचार्य स्वयं इस बात को भली-भांति समझते थे। इसलिए उनका जीवन केवल प्रवचनों और ग्रंथों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वे स्वयं सत्य की खोज में निरंतर गतिशील रहे। बाल्यावस्था में ही उन्होंने असाधारण मेधा का परिचय दिया। अल्प आयु में वेदों और उपनिषदों का अध्ययन कर लेना अपने आप में अद्भुत था, पर उससे भी अधिक महत्वपूर्ण था उनके भीतर उठने वाला प्रश्न—क्या ज्ञान केवल जान लेने का नाम है, या उसे जीना भी आवश्यक है। यही प्रश्न उन्हें संन्यास और देशाटन की ओर ले गया। वे विभिन्न मतों के विद्वानों से शास्त्रार्थ करते, पर उनका उद्देश्य पराजय या विजय नहीं होता था, बल्कि सत्य की स्थापना होती थी। काशी, जिसे अविनाशी नगरी कहा जाता है, शंकराचार्य के जीवन में एक विशेष स्थान रखती है। यह नगर सदियों से ज्ञान, साधना और विमर्श का केंद्र रहा है। गंगा के तट पर अनगिनत ऋषियों और साधकों ने आत्मबोध का अनुभव किया है। एक दिन शंकराचार्य अपने शिष्यों के साथ गंगा स्नान के लिए जा रहे थे। संकरा मार्ग था और उसी रास्ते पर एक चांडाल खड़ा था, जिसका कार्य शव उठाना था। उस समय के समाज में यह कार्य करने वाले व्यक्ति को अस्पृश्य माना जाता था।

क्षण भर में घटित हुई यह घटना अत्यंत साधारण लग सकती है। शंकराचार्य ने उससे मार्ग छोड़ने को कह दिया। यह कोई दुर्भावना से कहा गया वाक्य नहीं था, बल्कि सामाजिक संस्कारों की स्वचालित प्रतिक्रिया थी। परंतु सत्य की परीक्षा अक्सर ऐसे ही क्षणों में होती है, जब हम सजग नहीं होते। चांडाल ने जो उत्तर दिया, उसने उस क्षण को साधारण नहीं रहने दिया। उसने अत्यंत शांत स्वर में प्रश्न किया कि आप किसे हटने के लिए कह रहे हैं—इस शरीर को, जो मिट्टी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से बना है, या उस चेतना को, जो इस शरीर को जीवित रखती है। यदि शरीर हट भी जाए, तो क्या चेतना हट जाएगी। और यदि आप चेतना को हटने के लिए कह रहे हैं, तो क्या वह आपके कहने से हट सकती है। यह प्रश्न केवल तर्क नहीं था, यह अनुभव से उपजा हुआ सत्य था। इन शब्दों ने शंकराचार्य को भीतर तक झकझोर दिया। वर्षों से जिस अद्वैत का वे उपदेश दे रहे थे, वह आज उनके सामने साकार खड़ा था। यह कोई शास्त्रार्थ नहीं था, जहां तर्कों की बाजीगरी हो, बल्कि यह आत्मा से आत्मा का संवाद था। उन्होंने तुरंत समझ लिया कि सामने खड़ा व्यक्ति सामाजिक दृष्टि से चाहे जो हो, पर चेतना की दृष्टि से वह उच्च अवस्था में है।

उस क्षण शंकराचार्य ने जो किया, वही उन्हें सामान्य विद्वान से महान आचार्य बनाता है। उन्होंने बिना किसी संकोच, बिना किसी गणना के, उसी चांडाल के चरणों में प्रणाम किया। यह प्रणाम किसी व्यक्ति को नहीं, बल्कि सत्य को था। उनके शिष्यों के लिए यह दृश्य अत्यंत विचलित करने वाला था। वे सामाजिक मान्यताओं में बंधे थे और उन्हें यह समझ नहीं आ रहा था कि उनके गुरु ऐसा क्यों कर रहे हैं।

शंकराचार्य ने शिष्यों की उलझन को देखा और उन्हें समझाया कि गुरु की पहचान बाहरी आवरण से नहीं होती। जो व्यक्ति अज्ञान का नाश कर दे, वही गुरु है। यदि कोई चांडाल भी ब्रह्मज्ञान से युक्त है, तो वह पूजनीय है, और यदि कोई उच्च कुल में जन्म लेकर भी अज्ञान में डूबा है, तो वह शिष्य है। इस कथन में केवल सामाजिक विद्रोह नहीं था, बल्कि आध्यात्मिक सत्य की निर्भीक घोषणा थी।

इस घटना ने शंकराचार्य के दर्शन को और अधिक गहराई दी। उन्होंने मनुष्य मात्र में एक ही चेतना होने के विचार को और दृढ़ता से प्रस्तुत किया। उनके लिए अब अद्वैत केवल सिद्धांत नहीं, बल्कि जीवन की सहज दृष्टि बन चुका था। कहा जाता है कि इसी अनुभव की अभिव्यक्ति 'मनीषा पंचकम्' में हुई, जहां उन्होंने स्पष्ट कहा कि आत्मबोध से युक्त व्यक्ति, चाहे वह किसी भी वर्ण या अवस्था का हो, मेरा गुरु है।

आज के समय में यह प्रसंग हमें असहज कर सकता है, क्योंकि हम स्वयं को आधुनिक और प्रगतिशील मानते हैं। फिर भी हम अनजाने में अनेक प्रकार के भेद पाल लेते हैं—ज्ञान के आधार पर, पद के आधार पर, भाषा, वर्ग या विचारधारा के आधार पर। शंकराचार्य की यह कथा हमें याद दिलाती है कि जब तक भीतर का अहं जीवित है, तब तक अद्वैत केवल शब्दों में रहेगा।

यह घटना हमें सीख देती है कि सच्चा ज्ञान विनम्र बनाता है। जो व्यक्ति जितना अधिक जानता है, यदि वह उतना ही अधिक झुकना नहीं सीखता, तो उसका ज्ञान अधूरा है। शंकराचार्य का प्रणाम इस बात का प्रमाण है कि महानता स्वयं को अचूक मानने में नहीं, बल्कि सत्य के सामने स्वयं को समर्पित करने में है। अंततः चांडाल और शंकराचार्य की यह भेंट हमें यह समझाती है कि सत्य कहीं दूर नहीं, वह हर उस स्थान पर प्रकट हो सकता है जहां चेतना जाग्रत है। गुरु कोई निश्चित चेहरा नहीं, बल्कि वह क्षण है जब अज्ञान टूटता है। और जब ऐसा होता है, तब शिखर को भी झुकने में संकोच नहीं होता। यही अद्वैत का जीवित सत्य है, और यही इस कथा का अमर संदेश।

भारत-अमेरिका व्यापार समझौता : मोदी नेतृत्व की वैश्विक दृढ़ता

अंतरराष्ट्रीय राजनीति और वैश्विक व्यापार के परिदृश्य में कोई भी समझौता केवल आंकड़ों या कर-प्रतिशतों तक सीमित नहीं होता, वह राष्ट्र की संप्रभुता, नेतृत्व की दृढ़ता और भविष्य की दिशा का भी संकेतक होता है। भारत और अमेरिका के बीच हालिया व्यापारिक सहमति, जिसके अंतर्गत प्रस्तावित 50 प्रतिशत टैरिफ को घटाकर 18 प्रतिशत किया गया है, इसी दृष्टि से एक अत्यंत महत्वपूर्ण और दूरगामी घटना है। यह निर्णय केवल आर्थिक राहत नहीं, बल्कि बदलते वैश्विक शक्ति-संतुलन और भारत की बढ़ती सौदेबाजी क्षमता का प्रमाण है। यहां "देर आए, दुरुस्त आए" की कहावत पूरी तरह चरितार्थ होती है। जब अमेरिका द्वारा भारतीय उत्पादों पर ऊँचे टैरिफ का दबाव बनाया गया था, तब यह आशंका व्यक्त की जा रही थी कि भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्था को अंततः झुकना पड़ेगा। वैश्विक व्यापार का हालिया इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि बड़ी शक्तियां अक्सर दबाव की राजनीति के माध्यम से अपने हित साधती हैं। किंतु फरवरी 2025 में आरंभ हुई इस व्यापारिक प्रक्रिया का फरवरी 2026 में सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ना यह दर्शाता है कि भारत ने न तो जल्दबाजी दिखाई और न ही अपने राष्ट्रीय हितों से समझौता किया। भारत ने समय लिया, परिस्थितियों का मूल्यांकन किया और अंततः संतुलित व सम्मानजनक परिणाम प्राप्त किया। 50 प्रतिशत से 18 प्रतिशत तक की टैरिफ कटौती का तात्कालिक प्रभाव व्यापारिक जगत और शेयर बाजार में दिखाई दिया। निवेशकों का भरोसा लौटा, निर्यातकों को राहत मिली और बाजार में सकारात्मक संकेत उभरे। किंतु इस निर्णय का वास्तविक महत्व इससे कहीं अधिक व्यापक है। यह इस बात की पुष्टि करता है कि भारत अब केवल नियमों का पालन करने वाला देश नहीं, बल्कि नियमों के निर्माण और पुनर्परिभाषा में अपनी भूमिका सुनिश्चित करने वाला राष्ट्र बन चुका है। अमेरिका जैसी महाशक्ति का अपने रुख में नरमी लाना भारत की आर्थिक ताकत, रणनीतिक धैर्य और राजनीतिक आत्मविश्वास का प्रत्यक्ष प्रमाण है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश नीति की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उसमें संवाद है, पर दबाव के आगे समर्पण नहीं। चाहे वह रक्षा सहयोग हो, ऊर्जा सुरक्षा हो या व्यापारिक समझौते-हर क्षेत्र में भारत ने अपने हितों को केंद्र में रखते हुए आगे बढ़ने का प्रयास किया है। इस व्यापारिक डील में भी भारत ने बिना झुके, बिना रुके और बिना कमजोर पड़े अपनी शर्तें स्पष्ट रूप से रखीं। यही कारण है कि अंततः अमेरिका को अपने प्रस्तावों में संशोधन करना पड़ा। यह केवल एक व्यापारिक जीत नहीं, बल्कि राजनीतिक परिपक्वता और नेतृत्व की दृढ़ता का उदाहरण है। इस समझौते से भारतीय उद्योगों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में एक उन्नत स्थिति प्राप्त होगी। कम टैरिफ का अर्थ है कि भारतीय उत्पाद अमेरिकी बाजार में अधिक प्रतिस्पर्धी होंगे, उनकी पहुंच बढ़ेगी और "मेक इन इंडिया" को नया प्रोत्साहन मिलेगा। टेक्सटाइल, फार्मास्यूटिकल्स, ऑटोमोबाइल, कृषि-आधारित उत्पाद और उभरते तकनीकी क्षेत्र-सभी को इससे दीर्घकालिक लाभ होने की संभावना है। भारत अब केवल सस्ता श्रम या कच्चा माल उपलब्ध कराने वाला देश नहीं, बल्कि मूल्यवर्धित उत्पादन और नवाचार की दिशा में अग्रसर अर्थव्यवस्था बनता जा रहा है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संसदीय दल की बैठक में जिस संयम और आत्मविश्वास के साथ भारत-अमेरिका व्यापार समझौते को "निरंतर धैर्य का परिणाम" बताया, वह उनकी कूटनीतिक शैली का सार है। यह समझौता किसी अचानक हुए घटनाक्रम का नतीजा नहीं, बल्कि एक वर्ष तक चली रणनीतिक प्रतीक्षा, विकल्पों के विस्तार और संतुलित संवाद का परिणाम है। मोदी ने स्पष्ट संकेत दिया कि सरकार ने विपक्ष की आलोचनाओं और तात्कालिक दबावों के बावजूद धैर्य नहीं छोड़ा, क्योंकि वैश्विक व्यापार और भू-राजनीति में जल्दबाज़ी अक्सर महंगी पड़ती है। अमेरिका का झुकना किसी भावनात्मक मित्रता का परिणाम नहीं, बल्कि ठोस रणनीतिक विवशता का नतीजा है। बीते एक वर्ष में भारत ने यह स्पष्ट कर दिया कि उसके पास विकल्प हैं-रूस के साथ ऊर्जा सहयोग, यूरोपीय संघ के साथ ऐतिहासिक मुक्त व्यापार समझौता और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में अपनी बढ़ती भूमिका।

यदि वाशिंगटन भारत पर एकतरफा दबाव बनाए रखता, तो अमेरिकी कंपनियां दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते बड़े बाजार से बाहर हो जातीं। ट्रंप द्वारा 500 अरब डॉलर के आयात, शून्य टैरिफ और रूसी तेल त्यागने जैसे नाटकीय दावे इसी दबाव की राजनीति का हिस्सा थे, जिन्हें भारत ने न तो सार्वजनिक टकराव का मुद्दा बनाया और न ही स्वीकारोक्ति दी। मोदी का इन पर मौन यह दर्शाता है कि भारत इस घटनाक्रम को अंतिम समझौते के रूप में नहीं, बल्कि दिशा-निर्धारण के रूप में देख रहा है। इसके विपरीत, भारतीय विपक्ष इस पूरे प्रकरण में अपनी राजनीतिक अधीरता और रणनीतिक अपरिपक्वता को उजागर करता रहा। उसने टैरिफ को लेकर तात्कालिक लाभ-हानि की भाषा में सरकार को घेरने की कोशिश की, जबकि अंतरराष्ट्रीय व्यापार वार्ताएं समय, धैर्य और बहुस्तरीय गणनाओं की मांग करती हैं। विपक्ष यह समझने में असफल रहा कि कूटनीति में कभी-कभी पीछे हटना नहीं, बल्कि प्रतीक्षा करना ही सबसे बड़ा कदम होता है। आज जब अमेरिका को अपना अड़ियल रुख छोड़ना पड़ा है और भारत फिर से वैश्विक प्रतिस्पर्धा की अग्रिम पंक्ति में खड़ा दिख रहा है, तब यह स्पष्ट है कि मोदी की नीति न केवल दबाव से मुक्त थी, बल्कि दूरदर्शी भी। यही नीति भारत को एक आत्मविश्वासी, प्रभावशाली और सौदे की शर्तें तय करने वाली शक्ति के रूप में स्थापित कर रही है।

अभियान

भीड़ नहीं, भाव देखता है नंदलाल: रुक जाना भी बांके बिहारी की भक्ति है

वृंदावन कोई पर्यटन स्थल नहीं है, यह भाव की भूमि है। यहां पत्थर भी बोलते हैं, गलियां भी पुकारती हैं और हर श्वास में "राधे-राधे" का स्वर गूंजता है। ठाकुर बांके बिहारी के दर्शन की लालसा जब हृदय में उठती है, तो वह केवल एक यात्रा नहीं रहती, वह आत्मा की पुकार बन जाती है। नए साल के आते ही यह पुकार और तीव्र हो जाती है। मन कहता है—साल की शुरुआत ठाकुर जी के चरणों में हो जाए, तो जीवन धन्य हो जाए। यह भावना सुंदर है, पवित्र है, लेकिन भक्ति में केवल भाव ही नहीं, विवेक भी उतना ही आवश्यक है।

इन दिनों वृंदावन की गलियों में जो दृश्य दिखाई दे रहा है, वह भक्ति की तीव्रता का प्रमाण है। हर दिशा से भक्त आ रहे हैं—कोई पैदल, कोई वाहन से, कोई परिवार के साथ, कोई अकेले। आंखों में दर्शन की ललक है, मन में बस एक ही नाम है—बांके बिहारी। लेकिन इसी के साथ भीड़ इतनी अधिक हो चुकी है कि स्वयं प्रशासन को भक्तों से निवेदन करना पड़ा है कि कुछ दिन रुक जाएं। 29 दिसंबर से 5 जनवरी तक जारी की गई यह एडवाइजरी कोई रोक नहीं है, कोई कठोर आदेश नहीं है, बल्कि इसे ठाकुर जी की करुणा समझना चाहिए, जो प्रशासन के माध्यम से भक्तों तक पहुंच रही है।

हर साल नए साल के मौके पर वृंदावन में लाखों श्रद्धालु पहुंचते हैं, लेकिन इस बार संख्या और भी अधिक है। रोजाना चार से पांच लाख लोगों का आना अपने आप में बहुत बड़ी बात है। 31 दिसंबर और 1 जनवरी को यह संख्या और बढ़ जाती है। बांके बिहारी मंदिर का परिसर छोटा है, रास्ते संकरे हैं, और भीड़ समुद्र जैसी। जब इतनी आस्था एक छोटे से स्थान में उमड़ती है, तो अव्यवस्था का होना स्वाभाविक है। धक्का-मुक्की, उमस, थकान, घबराहट—ये सब उस आनंद को ढक देते हैं, जिसके लिए भक्त वृंदावन आता है।

भक्ति कभी भी कष्ट देकर नहीं सिखाई गई। हमारे शास्त्र कहते हैं कि शरीर ही धर्म का पहला साधन है। अगर शरीर सुरक्षित नहीं, स्वस्थ नहीं, तो भक्ति भी बोझ बन जाती है। बुजुर्ग, छोटे बच्चे, गर्भवती महिलाएं और बीमार लोग इस भीड़ में सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। चक्कर आना, सांस फूलना, घबराहट होना, भीड़ में फंस जाना—ऐसी घटनाएं पहले भी सामने आई हैं। क्या ठाकुर जी यह चाहेंगे कि उनके दर्शन के लिए कोई भक्त पीड़ा में पड़े? कभी नहीं।

बांके बिहारी जी का स्वभाव ही ऐसा है कि वे भक्त को अपने भाव से पहचानते हैं। कहा जाता है कि वे सामने खड़े व्यक्ति को नहीं, उसके मन को देखते हैं। अगर मन में सच्ची श्रद्धा है, तो दूरी कोई मायने नहीं रखती। वृंदावन के संत कहते हैं—जिसने मन में वृंदावन बसा लिया, वह कभी वृंदावन से दूर नहीं रहता। आज अगर हालात ऐसे हैं कि मंदिर तक पहुंचना जोखिम भरा है, तो घर बैठकर किया गया नाम-स्मरण भी उतना ही पुण्य है।

भीड़ के दिनों में दर्शन का अनुभव भी वैसा नहीं रह पाता, जैसा भक्त कल्पना करता है। सुरक्षाकर्मी लगातार श्रद्धालुओं को आगे बढ़ाते रहते हैं। कई बार तो बांके बिहारी के सामने दो पल हाथ जोड़कर खड़े होने का अवसर भी नहीं मिल पाता। आंखों में दर्शन अधूरे रह जाते हैं, मन कहता है—काश थोड़ा और ठहर पाते। इतनी कठिन यात्रा के बाद अगर मन तृप्त न हो, तो भीतर कहीं खालीपन रह जाता है। जबकि वृंदावन तो तृप्ति की भूमि है, यहां तो मन भर जाना चाहिए।

भीड़ के साथ एक और चिंता भी जुड़ी होती है—सामान का खो जाना। पर्स, मोबाइल, चश्मा, जूते, जरूरी कागजात—अत्यधिक भीड़ में इनके गुम होने की घटनाएं बढ़ जाती हैं। मंदिर के नियमों के अनुसार कई वस्तुएं अंदर ले जाने की अनुमति नहीं होती, जिससे भक्तों को बाहर सामान छोड़ना पड़ता है। इस चिंता में मन बार-बार भटकता है। जब मन अशांत हो, तो दर्शन भी रस नहीं दे पाते।

प्रशासन की अपील को अगर ध्यान से सुना जाए, तो उसमें डर नहीं, दया है। यह कहना कि "अभी मत आइए" वास्तव में यह कहना है कि "आप सुरक्षित रहिए, ठाकुर जी यहीं हैं, कहीं जा नहीं रहे।" बांके बिहारी कोई ऐसे देवता नहीं हैं जो केवल एक तारीख को ही मिलते हों। वे तो हर दिन, हर समय, हर भाव में उपलब्ध हैं। जनवरी के बाद भी फाल्गुन आएगा, होली आएगी, बसंत आएगा, जब वृंदावन अपने पूरे रंग और रस में होगा। तब भी दर्शन उतने ही पुण्य होंगे, उतने ही मधुर।

वृंदावन की एक बहुत गहरी परंपरा है—यहां कहा जाता है कि वृंदावन वही आता है, जिसे बुलावा आता है। बुलावा केवल अंदर से नहीं आता, परिस्थितियों से भी आता है। अगर इस समय परिस्थितियां कह रही हैं कि रुक जाओ, तो इसे ठाकुर जी का ही संकेत मानना चाहिए। भक्ति में जिद नहीं होती, समर्पण होता है। और समर्पण का एक रूप यह भी है कि हम अपनी इच्छा को ठाकुर जी की इच्छा के आगे रख दें।

घर में रहकर भी भक्ति की जा सकती है। नाम जप, भजन, कथा, स्मरण—ये सब भी बांके बिहारी तक ही पहुंचते हैं। अगर मन से "राधे-राधे" निकला है, तो वह वृंदावन की हर गली से होकर ठाकुर जी तक जरूर पहुंचता है। कई संतों ने कहा है कि जो भीड़ में धक्का खाकर दर्शन करता है, उससे कहीं अधिक आनंद उसे मिलता है, जो शांत मन से स्मरण करता है।

भक्ति का अर्थ यह नहीं कि हम अपने और अपने परिवार के स्वास्थ्य की अनदेखी करें। माता-पिता को कष्ट में डालकर, बच्चों को भीड़ में घसीटकर, या स्वयं जोखिम उठाकर किया गया दर्शन ठाकुर जी को प्रसन्न नहीं करता। उनकी प्रसन्नता तो इसी में है कि भक्त सुरक्षित रहे, स्वस्थ रहे और प्रेम में बना रहे।

नया साल केवल कैलेंडर बदलने से नहीं आता, वह मन की अवस्था से आता है। अगर मन में शांति है, संयम है और समझ है, तो हर दिन नया साल है। अगर नए साल के पहले दिन मंदिर न जा पाए, तो इसका मतलब यह नहीं कि वर्ष शुभ नहीं होगा। शुभता तो भाव से आती है, तारीख से नहीं।

इसलिए अगर आपने भी इन दिनों बांके बिहारी मंदिर जाने का प्लान बनाया है, तो थोड़ा ठहर जाइए। इसे त्याग मत समझिए, इसे ठाकुर जी पर भरोसा समझिए। जब भीड़ कम होगी, जब रास्ते सहज होंगे, जब आप निश्चिंत होकर चल पाएंगे—तब वही ठाकुर बांके बिहारी आपको मुस्कुराकर बुलाएंगे। उस दिन दर्शन केवल आंखों से नहीं होंगे, आत्मा से होंगे।

यही वृंदावन की सीख है, यही भक्ति की गहराई है।

भीड़ में नहीं, भाव में बसते हैं बांके बिहारी।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

खेड़ा जिले के विकास पथ पर एक और मील का पत्थर

- मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने फागवेल की धरती से खेड़ा जिले को 348 करोड़ रुपए से अधिक के 31 विकास कार्यों की भेंट दी
- मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने नवगठित फागवेल तहसील का शुभारंभ किया
- फागवेल में आज विकास का नया सूरज उगा है, विकास कार्यों की भेंट मिलने से इस क्षेत्र का होगा कायापलट : कैबिनेट मंत्री श्री रमणभाई सोलंकी
- खेड़ा जिला 'गोल्डन लीफ' से अब 'गोल्डन डेवलपमेंट' की दिशा में अग्रसर : राज्य मंत्री श्री संजयसिंह महिड़ा

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 2002 में फागवेल की पवित्र धरा से ही गुजरात गौरव यात्रा शुरू कर विकास की नींव रखी थी
- 'मुख्यमंत्री ग्रामोत्थान योजना' के तहत राज्य के 114 गांवों को शहरों जैसी सुविधाएं दी जाएंगी
- फागवेल तालुका सेवा सदन के लिए भूमि आवंटित हो चुकी है और 1 वर्ष के भीतर ही लोगों को आधुनिक कार्यालय की सुविधा प्राप्त हो जाएगी

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुरुवार को खेड़ा जिले के फागवेल से वीर भाथीजी महाराज के चरणों में शीश नवाकर जिले के सर्वांगीण विकास के लिए 348 करोड़ रुपए से अधिक के 31 विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास किया। इस अवसर पर उन्होंने यह घोषणा की कि नवगठित फागवेल तहसील के प्रशासन को गति देने के लिए अत्याधुनिक तालुका सेवा सदन का निर्माण एक वर्ष के भीतर पूरा हो जाएगा।

इस अवसर पर जनसमूह को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि फागवेल शौर्य और श्रद्धा की पवित्र धरती है, जिसे न केवल गुजरात, बल्कि पूरा देश जानता है। वर्ष 2002 में तत्कालीन मुख्यमंत्री और मौजूदा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात की अस्मिता को उजागर करने के लिए 'गुजरात गौरव यात्रा' की शुरुआत यहीं से की थी। आज वह विकास यात्रा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में वैश्विक स्तर पर पहुंच गई है।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

ने हमेशा अस्मिता, संस्कृति और सनातन धर्म का गौरव उजागर किया है। सोमनाथ की रक्षा करने वाले वीर हमीरजी गोहिल और गौरक्षा के लिए बलिदान देने वाले भाथीजी महाराज जैसी विभूतियां को गौरव देने के साथ ही प्रधानमंत्री ने विकास की राजनीति से विकास का एक नया इतिहास रचा है।

मुख्यमंत्री ने ग्रामीण विकास पर बल देते हुए कहा कि शहरीकरण के बोझ को कम करने के लिए गांवों को भी शहरों जैसी सुविधाएं मुहैया कराने के लिए तहसील मुख्यालय वाले 114 ऐसे गांवों के विकास के लिए 'मुख्यमंत्री ग्रामोत्थान योजना' लागू की है, जहां नगर पालिका नहीं है।

उन्होंने कहा कि आगामी समय में इस योजना का दायरा बढ़ाकर 10,000 से अधिक आबादी वाले बड़े गांवों को भी नई योजना के तहत शामिल कर लिया जाएगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'विकसित भारत@2047' के विजन का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि केंद्र सरकार का इस वर्ष का बजट 'कर्तव्य' पर आधारित है। उन्होंने सभी लोगों से प्रधानमंत्री द्वारा प्रेरित 'वोकल फॉर लोकल' और 'हर घर स्वदेशी' के मंत्र को अपनाकर विकसित खेड़ा से विकसित गुजरात और विकसित गुजरात से विकसित भारत की यात्रा में शामिल होने का आह्वान किया।

कैबिनेट मंत्री श्री रमणभाई सोलंकी ने खेड़ा जिले के आस्था के केंद्र फागवेल में भव्य कार्यक्रम के आयोजन के लिए बधाई देते हुए वीर भाथीजी महाराज के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए कहा कि इस पवित्र धाम में आज विकास का नया सूरज उगा है।

उन्होंने कहा कि सिंचाई, जलापूर्ति और ग्रामीण ढांचागत सुविधाओं जैसे विकास कार्यों के लोकार्पण और शिलान्यास से फागवेल और खेड़ा जिले का कायापलट होगा। उन्होंने विश्वास जताया कि नई तहसील बनने से प्रशासनिक प्रक्रियाएं आसान हो जाएंगी और जनता की सुविधा में वृद्धि होगी।

श्री सोलंकी ने कहा कि राज्य सरकार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मंत्र 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' को चरितार्थ कर रही है। उन्होंने नागरिकों से सरकार के इस विकास के यज्ञ में शामिल होकर जिले के गौरवशाली बनाने के लिए सहयोग देने की अपील की।

राजस्व राज्य मंत्री श्री संजयसिंह महिड़ा ने कहा कि कपड़वंज की पवित्र धरा पर आज शक्ति, भक्ति और विकास का त्रिवेण संगम रचा है। उन्होंने कहा कि जो खेड़ा जिला पहले केवल 'गोल्डन लीफ' (तंबाकू) के लिए जाना जाता था, आज वह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में 'गोल्डन डेवलपमेंट' की दिशा में तेज गति से आगे बढ़ रहा है।

उन्होंने कहा कि प्रशासनिक सरलता और जनोन्मुखी दृष्टिकोण अपनाते हुए गठित की गई नई फागवेल तहसील से 169 वर्ग किमी क्षेत्र के नागरिकों के लिए तहसील मुख्यालय की दूरी कम हो जाएगी और सरकारी कार्यों में तेजी आएगी। उन्होंने जिले में सरकारी योजनाओं की उपलब्धियों के उल्लेख के साथ विकास कार्यों से होने वाले बदलाव की बात भी कही।

बालासिनोर के विधायक श्री मानसिंह चौहान और जिला कलेक्टर श्री अमित प्रकाश यादव ने स्वागत भाषण में कार्यक्रम की रूपरेखा दी। निवासी अपर कलेक्टर श्री जे.बी. देसाई ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने फागवेल तालुका सेवा सदन के भूमि आवंटन का आदेश पत्र तहसीलदार और टीडीओ को सौंपा।

मुख्यमंत्री ने आज जिन विकास कार्यों की भेंट दी उनमें 234 करोड़ रुपए से अधिक के 13 कार्यों का लोकार्पण और 113 करोड़ रुपए से अधिक के 18 विकास कार्यों का शिलान्यास शामिल है। इन विकास कार्यों में गुजरात जलापूर्ति और गटर व्यवस्था बोर्ड, सड़क एवं भवन विभाग (राज्य), नड़ियाद महानगर पालिका और स्वास्थ्य विभाग के अलावा कपड़वंज नगर पालिका और पशुपालन विभाग के कार्य शामिल हैं।

कार्यक्रम में जिला राज्य मंत्री श्री ईश्वरसिंह पटेल, विधायक सर्वश्री पंकजभाई देसाई, अर्जुनसिंह चौहाण, राजेशकुमार झाला, कल्पेशभाई परमार, योगेन्द्रसिंह परमार, संगठन के पदाधिकारी श्री अजय ब्रह्मभट्ट और सुश्री नयनाबेन पटेल, जिला कलेक्टर श्री अमित प्रकाश यादव, नड़ियाद महानगर पालिका आयुक्त श्री जी.एच. सोलंकी, जिला विकास अधिकारी श्री जयंत किशोर सहित कई प्रशासनिक अधिकारी, संगठन के पदाधिकारी, अग्रणी और खेड़ा के नागरिक उपस्थित रहे।

विदेशी सैलानियों को आकर्षित करने के मामले में गुजरात शीर्ष तीन राज्यों में शामिल

(जीएनएस)। गांधीनगर : भारत के पर्यटन क्षेत्र में 2024 में मजबूत विकास देखा गया है, जिसमें देश में आने वाले विदेशी पर्यटकों (एफटीए) की संख्या 99.5 लाख पर पहुंच गई है। उधर, अंतरराष्ट्रीय पर्यटक आगमन (आईटीए) भी बढ़कर 2.05 करोड़ हो गया है, जो कोविड से पहले के वर्ष 2019 की तुलना में 14.85 फीसदी की वृद्धि दिखाता है। राष्ट्रीय स्तर पर दर्ज इस वृद्धि में गुजरात भी विदेशी पर्यटकों के लिए तीसरे सबसे पसंदीदा राज्य के रूप में उभरा है, जो वैश्विक पर्यटन क्षेत्र में राज्य की बढ़ती प्रतिष्ठा को दर्शाता है। राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन क्षेत्र की इस प्रगति का श्रेय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और राज्य में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व को जाता है, जिन्होंने गुजरात की संस्कृति, अद्भुत प्राकृतिक परिदृश्यों और आधुनिक आकर्षणों को दुनिया के सामने प्रस्तुत करने के लिए निरंतर प्रयास किए हैं। उनके अविरत प्रयासों के कारण गुजरात आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक लोकप्रिय पर्यटन क्षेत्र बन गया है और भारत के पर्यटन क्षेत्र के विकास में भी उल्लेखनीय योगदान दिया है।

केंद्रीय पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय द्वारा साझा की गई जानकारी के अनुसार

मुख्यमंत्री के कुशल नेतृत्व में पर्यटन क्षेत्रों का सर्वांगीण विकास, सोमनाथ, द्वारका, गिर, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी और कच्छ रण उत्सव देखने पहुंचे विदेशी पर्यटक

2024 में सबसे अधिक विदेशी पर्यटकों के आगमन की दृष्टि से शीर्ष पांच राज्यों में महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, गुजरात, उत्तर प्रदेश और राजस्थान का समावेश होता है। मंत्रालय द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार 2024 में अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के आगमन के मामले में भारत पूरी दुनिया में 20वें स्थान पर रहा, जहां 2.05 करोड़ पर्यटक भारत आए। वहीं, 2023-24 में पर्यटन क्षेत्र में 8.46 करोड़ लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त हुए। पूंजी निवेश के लिए राज्यों को विशेष सहायता (वित्तीय और इंफ्रास्ट्रक्चर) और स्वदेश दर्शन 2.0 जैसी योजनाओं के सहयोग से इस सफलता को प्राप्त करने में मदद मिली है।

गुजरात ने इन पहलों के सहयोग के साथ राज्य के धार्मिक स्थलों, इको-टूरिज्म, सांस्कृतिक विरासत और आइकॉनिक स्थलों को बढ़ावा देने का अहम कार्य किया है। गुजरात की यह सफलता राज्य और केंद्र सरकार के संयुक्त प्रयासों को प्रतिबिंबित करती है।

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी जैसे आइकॉनिक प्रोजेक्ट और वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम जैसे कार्यक्रमों ने पर्यटन क्षेत्र में श्रेष्ठता के नए मानक स्थापित किए हैं और पर्यटकों के अनुभव को समृद्ध बनाकर वैश्विक स्तर पर भारत की स्थिति को और मजबूत किया है।

विदेशी पर्यटकों की संख्या के मामले में तीसरे स्थान पर रहे गुजरात की उपलब्धि केवल आंकड़ा नहीं है, बल्कि यह स्पष्ट विजन, सशक्त नेतृत्व और सांस्कृतिक गौरव को दर्शाता है। हेरिटेज, इको-टूरिज्म और आइकॉनिक स्थलों पर ध्यान केंद्रित करके गुजरात एक पसंदीदा वैश्विक पर्यटन क्षेत्र के रूप में अपनी प्रतिष्ठा को और मजबूत करने के लिए तैयार है।

वर्ष 2024 में गुजरात आए विदेशी पर्यटक राज्य के विविधतापूर्ण स्थलों को देखने पहुंचे, जिनमें धार्मिक क्षेत्र, हेरिटेज स्थल, वन्यजीव और आधुनिक विकास के आकर्षण शामिल हैं। सोमनाथ ज्योतिर्लिंग में हर साल बड़ी संख्या में दुनिया भर के श्रद्धालु-पर्यटक आते हैं, जबकि आध्यात्मिक साधकों के लिए द्वारका हमेशा से पसंदीदा स्थल रहा है। एशियाई शेरों के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध गिर राष्ट्रीय उद्यान भी गुजरात आने वाले पर्यटकों के लिए हमेशा से पसंदीदा स्थल रहा है। केवड़िया में दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा- स्टैच्यू ऑफ यूनिटी भारत की एकता और आधुनिक इंजीनियरिंग कौशल का प्रतीक बनकर खड़ी है। इन स्थानों पर हर साल लाखों की संख्या में पर्यटक पहुंचते हैं। कच्छ के सफेद रण ने सैलानियों के लिए एक अनोखे परिदृश्य और सांस्कृतिक अनुभव के द्वार खोल दिए हैं। इन स्थलों के आकर्षण के कारण वर्ष 2024 में विदेश से आने वाले पर्यटकों की संख्या के मामले में गुजरात ने देश में तीसरा स्थान प्राप्त किया है।

सूरत में आधुनिक निर्माण और डिज़ाइन का महाकुंभ 'स्थापत्य 2026' का भव्य आगाज 6 फरवरी से

(जीएनएस)। सूरत। बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन, आर्किटेक्चर और इंटीरियर डिज़ाइन की दुनिया में हो रहे नवीनतम नवाचारों और तकनीकी विकास को एक ही मंच पर प्रस्तुत करने वाली प्रतिष्ठित प्रदर्शनी 'स्थापत्य 2026' का भव्य शुभारंभ 6 फरवरी से सूरत इंटरनेशनल एग्जीबिशन एंड कन्वेंशन सेंटर (एसआईईसीसी), सरसाना में होने जा रहा है। इंस्टीट्यूट ऑफ सिविल इंजीनियर्स एंड आर्किटेक्ट्स–सूरत द्वारा आयोजित यह तीन दिवसीय प्रदर्शनी 9 फरवरी 2026 तक चलेगी और यह 'स्थापत्य' श्रृंखला का लगातार 28वां संस्करण है, जो अपने आप में इसकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा को दर्शाता है।

साल 1966 में स्थापित इंस्टीट्यूट ऑफ सिविल इंजीनियर्स एंड आर्किटेक्ट्स–सूरत द्वारा आयोजित 'स्थापत्य' को देश की आर्किटेक्चर और कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्री की एक आधारभूत और मार्गदर्शक प्रदर्शनी के रूप में देखा जाता है। बीते दशकों में यह मंच न केवल उद्योग के दिग्गजों और स्थापित ब्रांड्स के लिए महत्वपूर्ण साबित हुआ है, बल्कि नए उद्यमों, स्टार्टअप्स और इनोवेटिव तकनीकों को पहचान दिलाने का भी सशक्त माध्यम बना है। हर वर्ष की तरह इस बार भी 'स्थापत्य 2026' में आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर, स्मार्ट बिल्डिंग सॉल्यूशंस, इको-फ्रेंडली मटीरियल्स और अत्याधुनिक इंटीरियर डिज़ाइन से जुड़े उत्पादों की झलक देखने को मिलेगी।

इस वर्ष की प्रदर्शनी में देश-विदेश की 100 से अधिक कंपनियां हिस्सा ले रही हैं, जो

कंस्ट्रक्शन मटीरियल, बिल्डिंग टेक्नोलॉजी, आर्किटेक्चरल सॉल्यूशंस और इंटीरियर इनोवेशन के क्षेत्र में अपने नवीनतम प्रोडक्ट्स और सेवाओं को प्रदर्शित करेंगी। संस्था के प्रेसिडेंट कमलेश वैष्णव ने बताया कि 'स्थापत्य 2026' आम नागरिकों के लिए भी पूरी तरह खुली रहेगी और कोई भी व्यक्ति निशुल्क रजिस्ट्रेशन के बाद इस एग्जीबिशन में प्रवेश कर सकता है। उन्होंने गुजरात राज्य के सभी आर्किटेक्ट्स, सिविल इंजीनियर्स, स्ट्रक्चरल इंजीनियर्स, रियल एस्टेट से जुड़े पेशेवरों और आम नागरिकों से इस प्रदर्शनी का लाभ उठाने की अपील की है।

कमलेश वैष्णव ने यह भी जानकारी दी कि इस वर्ष प्रदर्शनी में 4 से 5 नई कंपनियां भाग ले रही हैं, जो खास तौर पर डिजिटल और ऑनलाइन सॉल्यूशंस पर फोकस कर रही हैं। इनमें सूरत की विल्टमार्ट कंपनी विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जो कंस्ट्रक्शन मटीरियल को ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से उपलब्ध कराने की सुविधा के साथ 'स्थापत्य 2026' में अपना औपचारिक लॉन्च करेगी। यह पहल कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्री में डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन की दिशा में एक अहम कदम मानी जा रही है।

प्रदर्शनी का औपचारिक उद्घाटन 6 फरवरी 2026 को सुबह 10 बजे पद्मश्री सम्मानित सावजीभाई ढोलकिया और सूरत के मेयर दक्षेशभाई मावानी की गरिमामय उपस्थिति में किया जाएगा। उद्घाटन के दिन ही शाम 6.30 बजे टेक्निकल सेमिनार का आयोजन होगा, जिसमें प्रख्यात आर्किटेक्ट सुमेश मोदी 'Beyond Buildings: Campus as Living Systems' विषय पर अपना विचारपूर्ण और भविष्यदृष्टि से भरपूर व्याख्यान प्रस्तुत करेंगे। यह सत्र आधुनिक आर्किटेक्चर में टिकाऊ और जीवंत परिसरों की अवधारणा को समझने का अवसर प्रदान करेगा।

7 फरवरी 2026 को शाम 5 बजे स्टूडेंट सिल्वर और गोल्ड मेडल अवॉर्ड प्रोग्राम का आयोजन किया जाएगा, जिसमें विभिन्न कॉलेजों में प्रथम रैंक प्राप्त करने वाले प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को गोल्ड और सिल्वर मेडल देकर सम्मानित किया जाएगा। यह कार्यक्रम युवा इंजीनियर्स और आर्किटेक्ट्स को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इसके बाद शाम 8 बजे प्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर डॉ. अंकिता मुलानी 'परिवारोत्सव (प्रेम, प्रेरणा और प्रोत्साहन का उत्सव)' विषय पर प्रेरक व्याख्यान देंगी, जो न केवल पेशेवर बल्कि व्यक्तिगत जीवन में भी संतुलन और सकारात्मकता का संदेश देगा।

पश्चिम रेलवे द्वारा होली त्योहार के अवसर पर हॉलिडे स्पेशल ट्रेनों का परिचालन

पश्चिम रेलवे से अब तक 231 हॉलिडे स्पेशल ट्रेन सेवाएँ अधिसूचित;सुदृढ़ होल्डिंग एवं भीड़ प्रबंधन व्यवस्थाएं सुनिश्चित

(जीएनएस)। त्योहारों के दौरान यात्रियों की सुविधा एवं सुगम आवागमन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुनः सुदृढ़ करते हुए पश्चिम रेलवे आगामी होली त्योहार के दौरान संभावित यात्री भीड़ को संभालने हेतु व्यापक तैयारियों के साथ पूरी तरह से सजग है। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की बढ़ती यात्रा मांग को पूरा करने के लिए अब तक 231 हॉलिडे स्पेशल ट्रेनों की सेवाएँ अधिसूचित की जा चुकी हैं। ये स्पेशल ट्रेनें 01 मार्च से 22 मार्च, 2026 की अवधि के दौरान देश के विभिन्न गंतव्यों के लिए परिचालित की जाएंगी, जिनमें उत्तर एवं पूर्व भारत के प्रमुख क्षेत्रों—उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान सहित अन्य महत्वपूर्ण राज्य—पर विशेष ध्यान दिया गया है। इन स्पेशल ट्रेनों की योजना यात्रियों को अतिरिक्त यात्रा विकल्प उपलब्ध कराने तथा त्योहारों के दौरान आरामदायक एवं सुविधाजनक यात्रा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से बनाई गई है। पश्चिम रेलवे द्वारा स्पेशल ट्रेनों के परिचालन की अग्रिम योजना बनाकर तथा विभिन्न सेक्टरों में आरक्षण प्रवृत्तियों और यात्री मांग की निरंतर निगरानी करते हुए एक सक्रिय एवं यात्री-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाया गया है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, पश्चिम रेलवे होली त्योहार के दौरान यात्री भीड़ के सुचारु प्रबंधन हेतु अतिरिक्त ट्रेन सेवाओं एवं व्यापक यात्री सुविधा उपायों के साथ पूरी तरह तैयार है। बुकिंग पैटर्न एवं यात्री आवागमन की सतत निगरानी की जा रही है तथा जहाँ संभव हो नियमित ट्रेनों में कोचों की वृद्धि भी की जा रही है। यात्रियों की मांग के आधार पर अतिरिक्त स्पेशल ट्रेनों पर भी विचार किया जाएगा तथा आने वाले दिनों में और भी ट्रेनों की अधिसूचना जारी की जाएगी। यात्रियों को अपनी यात्रा की बेहतर योजना बनाने में सहायता हेतु विभिन्न मीडिया माध्यमों से स्पेशल ट्रेनों एवं यात्री सुविधाओं का व्यापक प्रचार-प्रसार सुनिश्चित किया जा रहा है। श्री विनीत ने आगे बताया कि प्रमुख स्टेशनों पर भारी यात्री भीड़ की संभावना को देखते हुए पश्चिम रेलवे के प्रमुख टर्मिनलों एवं आरंभिक स्टेशनों पर व्यापक तौर पर भीड़ प्रबंधन व्यवस्थाएं पहले से ही लागू कर दी गई हैं। मुंबई सेंट्रल, बांद्रा टर्मिनस, उधना, सूरत, अहमदाबाद सहित अन्य महत्वपूर्ण स्टेशनों पर यात्रियों के सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित प्रवेश और बोर्डिंग को नियंत्रित करने हेतु समर्पित यात्री होल्डिंग क्षेत्र उपलब्ध कराए गए हैं। इन होल्डिंग क्षेत्रों में यात्रियों की सुविधा के लिए बैठने की व्यवस्था, पेयजल, शौचालय ब्लॉक, पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था, पंखे तथा जन-उद्घोषणा प्रणाली जैसी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त, कतार प्रबंधन, यात्री मार्गदर्शन एवं सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रमुख स्टेशनों पर आरपीएफ, जीआरपी एवं वाणिज्यिक कर्मचारियों की अतिरिक्त तैनाती की योजना बनाई गई है। सीसीटीवी निगरानी चौबीसों घंटे की जा रही है तथा संवेदनशील स्टेशनों पर वरिष्ठ रेल अधिकारी तैनात रहेंगे, ताकि संचालन की निगरानी कर आवश्यकता अनुसार त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित की जा सके। यात्रियों की सुगम आवाजाही एवं भीड़ से बचाव के लिए अतिरिक्त बुकिंग काउंटर, मोबाइल टिकटिंग व्यवस्थाएं तथा सघन उद्घोषणाएं भी उपलब्ध कराई जाएंगी।

हॉलिडे स्पेशल ट्रेनों के परिचालन के साथ-साथ मजबूत स्टेशन-स्तरीय तैयारियां एवं समन्वित भीड़ प्रबंधन रणनीतियां, होली त्योहार के दौरान यात्रियों की सुरक्षित, सुव्यवस्थित एवं आरामदायक यात्रा सुनिश्चित करने के लिए पश्चिम रेलवे की तत्परता को दर्शाती हैं।

पश्चिम रेलवे सभी यात्रियों से अपील करती है कि वे अपनी यात्रा की अग्रिम योजना बनाएं, निर्धारित होल्डिंग क्षेत्रों का उपयोग करें तथा रेलवे स्टाफ एवं सुरक्षा कर्मियों का सहयोग करें, ताकि त्योहारों के दौरान सभी के लिए सुचारु आवागमन एवं सुखद यात्रा अनुभव सुनिश्चित किया जा सके।

शराबबंदी की धरती पर रईसी की रंगीन रात, साणंद में हाई–प्रोफाइल शराब–हुक्का महफिल का भंडाफोड़

(जीएनएस)। अहमदाबाद/साणंद। जिस गुजरात को देश में शराबबंदी के सबसे सख्त कानूनों वाला राज्य माना जाता है, वहीं एक बार फिर कानून को ठेंगा दिखाती रईसी और रंगीन रात का चौंकाने वाला मामला सामने आया है। अहमदाबाद ग्रामीण पुलिस ने बुधवार देर रात साणंद क्षेत्र में छापा मारकर एक हाई-प्रोफाइल शराब और हुक्का पार्टी का पर्दाफाश किया, जिसमें महंगी विदेशी शराब, हुक्का, तेज म्यूजिक और लग्जरी गाड़ियों का खुला प्रदर्शन किया जा रहा था। छापेमारी के दौरान पुलिस ने 43 पुरुषों और 38 महिलाओं समेत कुल 81 लोगों को हिरासत में लिया, जिनमें शहर के जाने-माने बिल्डर, व्यापारी और डॉक्टर शामिल बताए जा रहे हैं। यह पूरी घटना अहमदाबाद ग्रामीण इलाके में साणंद-नलसरोवर रोड पर स्थित निर्वाणा ग्रीन्स वीकेंड होम की है। जानकारी के मुताबिक, यहां बुधवार रात एक निजी पार्टी का आयोजन किया गया था। बाहर पार्किंग में BMW और ऑडी जैसी लग्जरी गाड़ियों की कतार लगी थी, जबकि अंदर मास्क लगाए महिलाएं और पुरुष तेज म्यूजिक पर नाचते नजर आ रहे थे। पार्टी में शामिल लोग यह मानकर निश्चिंत थे कि यह एक प्राइवेट आयोजन है और कानून की नजर से दूर रहेगा, लेकिन पुलिस की अचानक एंट्री ने पूरी महफिल में अफरा-तफरी मचा दी।

पुलिस अधिकारियों के अनुसार, यह पार्टी आदर्श अग्रवाल नामक व्यक्ति द्वारा अपनी शादी की 25वीं सालगिरह के मौके पर आयोजित की गई थी। इस मौके को 'सिल्वर जुबली सेलिब्रेशन' के रूप में मनाने के लिए विदेशी और महंगी शराब की व्यवस्था की गई थी, साथ ही हुक्का भी खुलेआम परोसा जा रहा था। प्राइवेट प्रॉपर्टी के अंदर 11 टेबल पर केक, शराब की बोतलें, हुक्का और अन्य सामग्री सजी हुई थी। तेज म्यूजिक के बीच लोग मास्क पहनकर डांस कर रहे थे, ताकि पहचान छिपी रहे और माहौल पूरी तरह बेफिक्र बना रहे।

अहमदाबाद ग्रामीण पुलिस के एसपी ओमप्रकाश जाट ने बताया कि उन्हें इस पार्टी को लेकर गुप्त सूचना मिली थी, जिसके आधार पर पुलिस टीम ने देर रात छापा मारा। जैसे ही पुलिस मौके पर पहुंची, वहां मौजूद लोगों में हड़कंप मच गया। कई लोग भागने की कोशिश में इधर-उधर दौड़ते नजर आए, लेकिन परिसर को चारों ओर से घेर लिया गया था, जिससे कोई बाहर नहीं निकल सका। पुलिस ने मौके से बड़ी मात्रा में शराब, हुक्का का सामान और 20 से अधिक लग्जरी गाड़ियां जब्त कीं। पुलिस द्वारा जब्त किए गए सामान की कुल कीमत करीब 2.91 करोड़ रुपये आंकी गई है।

पश्चिम रेलवे - रतलाम मंडल

ई-निविदा सूचना

वरिष्ठ मंडल विद्युत् इंजीनियर, कर्षण वितरण, रतलाम मंडल, पश्चिम रेलवे भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्य हेतु IREPS पोर्टल के माध्यम से खुली निविदाएं आमंत्रित करते हैं: **निविदा क्रमांक: EL/TRD/58/2025-26/21, दिनांक 02.02.2026. कार्य का नाम:** TRD Work in connection with BLAX Yard Remodeling with additional loop line under Simhastha 2028. **अनुमानित लागत:** रु. 1,37,73,083/-. **बयाना राशि:** रु.2,18,900/-. **समापन अवधि:** 18 Months. **निविदा दस्तावेज़ की राशि:** Nil. **ऑनलाइन बिडिंग बंद होने की दिनांक एवं समय:** 27.02.2026 at 15:00 hrs. **ऑफर की वैधता:** 60 days from the date of opening. **वेबसाइट: www.ireps.gov.in. नोटिस बोर्ड:** वरिष्ठ मंडल विद्युत् इंजीनियर, कर्षण वितरण, रतलाम मंडल, पश्चिम रेलवे के कार्यालय के प्रवेश द्वार के सामने। SPAN/13/1/441

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे

विविध कार्य

डेप्युटी चीफ इंजीनियर (कंस्ट्रक्शन)I, पश्चिम रेल्वे, इंदौर (MP) टेंडर नंबर: DADN-SWD-RKGC-15 आमंत्रित करते हैं। काम का नाम: BG/MG लाइन के फॉर्मेशन में तटबंध/कटिंग में मिट्टी का काम और ब्लैंकेटिंग का बचा हुआ काम, जिसमें यार्ड, पुल के अप्रोच आदि शामिल हैं, रेलवे के अप्रूव्ड डिज़ाइन और ड्राइंग के अनुसार पुल का निर्माण कार्य (माइनर-फाउंडेशन, सब-स्ट्रक्चर और सुपर-स्ट्रक्चर), रिटेनिंग/बाउंड्री/टोई वॉल/डायवर्जन ड्रेन, सर्कुलेटिंग एरिया, RCC रोड, RCC ओवर हेड टैंक और अन्य विविध कार्यों का निर्माण, डॉ. अंबेडकर नगर और पातालपानी स्टेशन पर इमारतों, कवरिंग शेड, पैसेंजर/गुड्स प्लेटफॉर्म, यात्री सुविधाओं, फुट ओवर ब्रिज, यार्ड ड्रेन, सर्विस बिल्डिंग स्ट्रक्चर का निर्माण। मशीन से कुचली हुई पत्थर की गिट्टी की सप्लाई और बिछाना, मेन लाइन, लूप लाइन और पॉइंट्स एंड क्रॉसिंग आदि के लिए BG/MG ट्रैक बिछाना और जोड़ना, P.Way सामग्री का परिवहन, रेल की वेल्डिंग, और अन्य आकस्मिक विविध कार्य आदि। यह सब पश्चिम रेलवे के रतलाम डिवीजन में डॉ. अंबेडकर नगर (महू) सनावद सेक्शन के गेज कन्वर्जन के संबंध में डॉ. अंबेडकर नगर पातालपानी स्टेशन के बीच किया जाएगा। अनुमानित लागत: रु. 38,22,43,102.21. EMD: रु. 20,61,200/-. टेंडर जमा करने की तारीख और समय: ता. 27.02.2026 को 15:00 बजे तक। टेंडर खोलने की तारीख: 27.02.2026 को 15:30 बजे। योग्यता मानदंडों सहित टेंडर का पूरा विवरण ई-टेंडर पोर्टल www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है। 1076

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे - रतलाम मंडल

ई-निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से तथा उनके लिए वरि. कोचिंग डिपो अधिकारी इंदौर पश्चिम रेलवे, रतलाम द्वारा निम्नलिखित कार्य/ कार्यों के लिए खुली ई-निविदा निविदा संख्या: **E-IND-WLI-2026 के विरुद्ध अंतिम तिथि 03/03/2026 15:00 बजे तक (एकल पैकेट सिस्टम)** आमंत्रित की जाती है। बिडर केवल अंतिम तिथि एवं समय तक ही अपनी बिड़ जमा कर सकेंगे। इस निविदा के विरुद्ध मैन्युअल ऑफ़र की अनुमति नहीं है, और प्राप्त ऐसे किसी भी मैन्युअल ऑफ़र को अनदेखा कर दिया जाएगा। यदि किसी कारण-वश निविदा खुलने की नियत दिनांक को अवकाश घोषित किया जाता है तो संबंधित निविदायें अवकाश के अगले कार्य दिवस मे नियत समय पर खोली जायेगी। **कार्य का नाम एवं स्थान:** अंडरस्लंग और ओवरहेड वॉटर टैंक वाले कोचों के लिए जल स्तर संकेतक की व्यवस्था। स्थान: कोचिंग डिपो-इंदौर। **कार्य की अनुमानित लागत:** रु. 2,29,60,000/- (सभी कर, ड्यूटीज एवं जी. एस. टी. सहित)। **बयान राशि:** रु. 2,64,800/-. **समापन अवधि:** एल.ओ.ए जारी होने की तारीख से 12 वर्ष। **कार्यालय का पता जहां निविदा खुलेगी:** कार्यालय - वरि. कोचिंग डिपो अधिकारी इंदौर। **निविदा फार्म जमा करने का अंतिम समय:** 15:00 बजे दिनांक 03.03.2026 तक जमा करने का समय। **वेबसाईट व नोटिस बोर्ड जहां निविदा संबंधी सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सकती है:** निविदायें IREPS वेबसाईट पर देखी जा सकती है साथ ही इस संबंध मे कोई भी जानकारी वरि कोचिंग डिपो अधिकारी इंदौर, कार्यालय (प.रे.) से सभी कार्यालयीन दिवस पर प्राप्त की जा सकती है। SPAN/3/1/447

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly

मदार-पालनपुर सेक्शन में इंजीनियरिंग कार्य हेतु ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेगी

(जीएनएस)। उत्तर पश्चिम रेलवे के अजमेर मण्डल के मदार-पालनपुर रेलखण्ड पर मावल-श्री अमीरगढ़ स्टेशनों के बीच ब्रिज संख्या 812 पर स्टील गर्डर रिप्लेसमेंट कार्य हेतु ब्लॉक लिया गया है। इस ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेगी। जिसका विवरण निम्नानुसार है

आंशिक रद्द ट्रेनें

- 7 फरवरी 2026 की ट्रेन संख्या 14822 साबरमती-जोधपुर एक्सप्रेस साबरमती-आबूरोड के बीच आंशिक रद्द रहेगी।
- 6 फरवरी 2026 की ट्रेन संख्या 14821 जोधपुर-साबरमती एक्सप्रेस आबूरोड-साबरमती के बीच आंशिक रद्द रहेगी।

रिशेड्यूल ट्रेनें

1. 6 फरवरी 2026 की ट्रेन संख्या 12462 साबरमती-जोधपुर वंदे भारत एक्सप्रेस साबरमती से अपने निर्धारित समय से 01 घंटे की देरी से प्रस्थान करेगी।
2. 6 फरवरी 2026 की ट्रेन संख्या 22548 साबरमती-ग्वालियर एक्सप्रेस साबरमती से अपने निर्धारित समय से 01 घंटे की देरी से प्रस्थान करेंगी।
3. 5 फरवरी 2026 की ट्रेन संख्या 14701 श्रीगंगानगर-बान्द्रा टर्मिनस अरावली एक्सप्रेस श्रीगंगानगर से अपने निर्धारित समय से 03 घंटे की देरी से प्रस्थान करेगी।
4. 6 फरवरी 2026 की ट्रेन संख्या 09084 भगत की कोठी-मुंबई सेंट्रल स्पेशल भगत की कोठी से अपने निर्धारित समय से 03.30 घंटे की देरी से प्रस्थान करेगी।

ट्रेनों के ठहराव, समय और संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

यात्रियों की सुविधा हेतु भावनगर मंडल की विभिन्न ट्रेनों में स्थाई रूप से अतिरिक्त जनरल कोच की सुविधा

(जीएनएस)। यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए रेल प्रशासन द्वारा महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए कुछ प्रमुख ट्रेनों में स्थाई रूप से अतिरिक्त जनरल कोच लगाए जाने का निर्णय लिया गया है। इससे दैनिक यात्रियों एवं सामान्य श्रेणी के यात्रियों को यात्रा के दौरान अधिक सुविधा प्राप्त होगी।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि अतिरिक्त कोच का विवरण निम्नानुसार है:—

ट्रेन संख्या 20966/20965 भावनगर–साबरमती–भावनगर इंटरसिटी एक्सप्रेस में स्थाई रूप से 04 जनरल कोच लगाए जाएंगे। यह सुविधा 06 फरवरी, 2026 से भावनगर एवं गांधीग्राम दोनों स्टेशनों से प्रभावी होगी।

ट्रेन संख्या 12905/12906 पोरबंदर–शालीमार–पोरबंदर सुपरफास्ट एक्सप्रेस में स्थाई रूप से 01 अतिरिक्त जनरल कोच लगाया जा रहा है। यह कोच 04 फरवरी, 2026 से पोरबंदर स्टेशन से तथा 06 फरवरी, 2026 से शालीमार स्टेशन से जोड़ा जाएगा। इसके पश्चात इस ट्रेन में जनरल कोचों की संख्या 02 से बढ़कर 03 हो जाएगी।

ट्रेन संख्या 20968/20967 पोरबंदर–सिकंदराबाद–पोरबंदर सुपरफास्ट एक्सप्रेस में भी स्थाई रूप से 01 अतिरिक्त जनरल कोच की सुविधा प्रदान की जा रही है। यह सुविधा 03 फरवरी, 2026 से पोरबंदर स्टेशन से तथा 04 फरवरी, 2026 से सिकंदराबाद स्टेशन से लागू हो चुकी है। इसके साथ ही इस ट्रेन में जनरल कोचों की संख्या 02 से बढ़कर 03 हो गई है।

रेल प्रशासन द्वारा उठाया गया यह कदम यात्रियों की बढ़ती मांग को ध्यान में रखते हुए यात्रा को अधिक सुविधाजनक, सुरक्षित एवं आरामदायक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

ट्रेन के ठहराव, संरचना एवं समय-सारणी से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन कर सकते हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की केंद्रीय बजट पर पत्रकार वार्ता

- यह केंद्रीय बजट प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में विकसित भारत के लिए क्वांटम जंप देने वाला है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल
- ग्राम विकास से लेकर गिफ्ट सिटी तक के क्षेत्रों को सर्वग्राही विकास से कवर करने वाला केंद्रीय बजट गुजरात के लिए लाभदायक
- गिफ्ट सिटी में दिए गए टैक्स हॉलिडे से निवेशक ज्यादा भरोसे के साथ करेंगे निवेश
- कॉमनवेल्थ गेम्स की मेजबानी करने को तैयार गुजरात के खेल क्षेत्र को खेलो इंडिया मिशन से मिलेगी तेजी
- राष्ट्रीय वृद्धि में गुजरात के अहम योगदान के चलते 16वें वित्त आयोग के तहत राज्य का सेंट्रल डिवॉल्युशन 3.75 फीसदी किया गया
- पांच लाख से अधिक आबादी वाले टियर-2 और टियर-3 शहरों को सिटी इकोनॉमिक रीजन के रूप में विकसित करने का लाभ गुजरात के छोटे शहरों को भी मिलेगा

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने केंद्रीय बजट 2026-27 को तीन मुख्य कर्तव्यों के आधार पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विकसित भारत के निर्माण के लिए एक मजबूत बुनियाद तैयार करने वाला बजट करार दिया है।

उन्होंने इन तीन कर्तव्यों पर रोशनी डालते हुए कहा कि आर्थिक वृद्धि को गति देते हुए टिकाऊ विकास, लोगों की आकांक्षाएं पूरी कर क्षमता निर्माण से देश की समृद्धि में सक्रिय जनभागीदारी और 'सबका साथ, सबका विकास' को और अधिक गति देने की प्रतिबद्धता इस बजट में प्रतिबिंबित हुई है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुरुवार को गांधीनगर में आयोजित पत्रकार वार्ता में केंद्रीय बजट 2026-27 का स्वागत करने के साथ-साथ गुजरात को इस बजट से होने वाले लाभ के बारे में विस्तार से जानकारी दी। वित्त मंत्री श्री कनुभाई देसाई, वित्त विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री टी. नटराजन तथा मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री संजीव कुमार इस प्रेस वार्ता में मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री ने इसे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में 'रिफॉर्म एक्सप्रेस' को आगे बढ़ाने वाला विकसित भारत के लिए क्वांटम जंप (एक बड़ी छलांग) देने वाला बजट बताया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि भारत आज दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बनने की दिशा में गति कर रहा है, तब यह बजट

विकसित और आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में एक अहम कदम सिद्ध होगा।

उन्होंने कहा कि केंद्रीय बजट में फार्मा सेक्टर में 10 हजार करोड़ रुपए के आवंटन वाले बायोफार्मा शक्ति कार्यक्रम के माध्यम से देश को ग्लोबल बायोफार्मा मैन्युफैक्चरिंग हब बनाने का लक्ष्य तय किया गया है। गुजरात फार्मास्युटिकल क्षेत्र में देश का अगुवा है और बायोफार्मा शक्ति कार्यक्रम का लाभ राज्य के फार्मा सेक्टर को भी मिलेगा।

उन्होंने कहा कि इस बजट में टेक्सटाइल सेक्टर को बढ़ावा देने के लिए घोषित की गई 6 योजनाओं का लाभ राज्य के टेक्सटाइल क्षेत्र को गति देगा।

उन्होंने राज्य के 42.9 लाख से अधिक सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) को अर्थव्यवस्था की रीढ़ बताते हुए कहा कि केंद्र सरकार के इस वर्ष के बजट में 'चेम्पियन एमएसएमई' के निर्माण के लिए 10 हजार करोड़ रुपए के एसएमई ग्रोथ फंड की घोषणा की गई है। इससे एमएसएमई सेक्टर को सीधा लाभ मिलेगा और लिक्विडिटी यानी तरलता बढ़ेगी। मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि गुजरात चार सेमीकंडक्टर प्लांट के साथ देश का सेमीकंडक्टर हब बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इसे बजट में घोषित इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन 2.0 का लाभ मिलेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पीएम गति शक्ति से दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारा (डीएमआईसी) के माल ढुलाई मार्ग के नेटवर्क से लॉजिस्टिक सपोर्ट सुदृढ़ हुआ है, अब पूर्वी भारत में स्थित दानकुनी से हमारी टेक्सटाइल सिटी सूरत तक के नए समर्पित माल गलियारे (डीएफसी) से राज्य के व्यापार-उद्योग और मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर के लिए तेज लॉजिस्टिक्स सेवाएं उपलब्ध होंगी।

मुख्यमंत्री ने देश के फिनटेक हब गिफ्ट सिटी (गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंस टेक-सिटी) में दस वर्ष के टैक्स हॉलिडे यानी कर अवकाश को बढ़ाकर 20 वर्ष करने की घोषणा का स्वागत किया।

तीन कर्तव्यों के आधार पर विकसित भारत की मजबुत बुनियाद तैयार करने वाला बजट

- आर्थिक वृद्धि को गति देते हुए टिकाऊ विकास
- लोगों की आकांक्षाएं पूरी कर क्षमता निर्माण से देश की समृद्धि में सक्रिय जनभागीदारी
- 'सबका साथ, सबका विकास' के विजन को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता

इस बारे में विस्तार से बताते हुए उन्होंने कहा कि इस टैक्स हॉलिडे के चलते गिफ्ट सिटी में निवेशक ज्यादा भरोसे के साथ दीर्घकालिक निवेश के लिए आकर्षित होंगे। उन्होंने प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में राज्य के शहरों के ग्रोथ हब बनने का जिक्र करते हुए विश्वास व्यक्त किया कि इस बजट में 5 लाख से अधिक आबादी वाले टियर-2 और टियर-3 शहरों को सिटी इकोनॉमिक रीजन के रूप में विकसित करने की घोषणा से हमारे बड़े शहरों के साथ-साथ छोटे शहरों का विकास भी तेज गति से होगा।

मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि गुजरात आने वाले समय में कॉमनवेल्थ गेम्स की मेजबानी करने के लिए तैयार है, इसे बजट में घोषित खेलो इंडिया मिशन कार्यक्रम से और अधिक प्रेरणा और बल मिलेगा। मुख्यमंत्री ने राष्ट्रीय वृद्धि में गुजरात के महत्वपूर्ण योगदान का विशेष रूप से उल्लेख करते हुए कहा कि 16वें वित्त आयोग के तहत गुजरात के लिए सेंट्रल डिवॉल्युशन (केंद्रीय करों की विभाज्य निधि में गुजरात का हिस्सा) 3.48 फीसदी से बढ़ाकर3.75 फीसदी किया गया है। इसके परिणामस्वरूप राज्य में ग्रामीण क्षेत्रों सहित सभी तमाम इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट को गति मिलेगी।

युवाओं के लिए रोजगार निर्माण के नए द्वार खोलने वाली अनोखी योजना के बारे में उन्होंने कहा कि बदलते समय के साथ युवा प्रशिक्षण प्राप्त कर कंटेंट क्रिएशन के क्षेत्र में आगे बढ़ सकें, इसके लिए विशेष एनीमेशन, विजुअल इफेक्ट, गेमिंग और कॉमिक्स (एवीजीसी) सेक्टर में 2030 तक 20 लाख पेशेवर तैयार करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

इसके लिए देश में 15 हजार स्कूलों और 500 कॉलेजों में कंटेंट क्रिएटर लैब स्थापित किए जाएंगे। उन्होंने आशा जताई कि गुजरात के महत्वाकांक्षी युवाओं को इसका लाभ मिलेगा।

उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस विकासोन्मुखी बजट का लाभ प्राप्त कर गुजरात डबल इंजन सरकार की डबल स्पीड से विकसित भारत के निर्माण की अगुवाई करेगा।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, सचिव श्री अजय कुमार और वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

राजकोट : सेवा, साधना और स्वावलंबन का यज्ञ — गोंडल की धरती पर नारी शक्ति के उत्थान की भक्ति गाथा

(जीएनएस)। राजकोट जिले की पावन धरती पर स्थित गोंडल, जहां इतिहास ने राजसत्ता देखी है, वहीं वर्तमान ने सेवा और साधना से जन्म लेती एक नई शक्ति को साकार होते देखा। 31 जनवरी का दिन गोंडल के लिए केवल एक सरकारी आयोजन नहीं था, बल्कि यह दिन ग्रामीण नारी शक्ति के आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता और आर्थिक स्वावलंबन को समर्पित एक जीवंत भक्ति अनुष्ठान बन गया। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) योजना के अंतर्गत आयोजित कैश क्रेडिट कैंप उस दीपक की तरह प्रज्वलित हुआ, जिसकी लौ से सैकड़ों घरों में आशा, विश्वास और आत्मबल का उजाला फैलने वाला है। यह आयोजन किसी साधारण आर्थिक सहायता कार्यक्रम जैसा नहीं था। यह एक ऐसा यज्ञ था, जिसमें आहुति के रूप में आत्मविश्वास डाला गया, मंत्र के रूप में मार्गदर्शन बोला गया और प्रसाद के रूप में स्वावलंबन प्रदान किया गया। सखी मंडल से जुड़ी ग्रामीण महिलाएं जब इस कैंप में एकत्र हुईं, तो उनके चेहरे पर केवल जरूरत नहीं थी, बल्कि आगे बढ़ने की ललक, कुछ कर गुजरने की तपस्या और अपने परिवार व समाज के लिए कुछ रचने की भक्ति स्पष्ट झलक रही थी।

कैंप के दौरान तालुका विकास अधिकारी मिलनभाई उकावाला का मार्गदर्शन किसी गुरु की तरह रहा। उन्होंने महिलाओं को यह नहीं सिखाया कि केवल ऋण कैसे लिया जाए, बल्कि यह सिखाया कि ऋण को साधन बनाकर जीवन को कैसे बदला जाए। व्यवसाय योजना तैयार करने की प्रक्रिया को उन्होंने ऐसे समझाया, जैसे कोई साधक अपने साधना पथ को समझता है। बाजार अनुसंधान, ग्राहक की पहचान, उत्पादन की गुणवत्ता, वित्तीय अनुशासन और बुककीपिंग जैसे विषय उनके शब्दों में केवल तकनीकी बातें नहीं रहीं, बल्कि आत्मनियंत्रण और दूरदर्शिता की शिक्षा बन गईं।

ग्रामीण महिलाएं, जो वर्षों से घर-आंगन तक सीमित मानी जाती थीं, आज अपने उद्यम के भविष्य की योजना बनाती दिखाई दीं। किसी की आंखों में छोटा उद्योग खड़ा करने का सपना था, तो कोई अपने पहले से चल रहे काम को विस्तार देने की सोच में डूबी थी। बैंक मैनेजर द्वारा दी गई NRLM योजना की जानकारी ने इन सपनों को जमीन दी। वित्तीय मार्गदर्शन ने यह भरोसा दिलाया कि सरकार और संस्थाएं केवल योजनाएं नहीं बनातीं, बल्कि जब महिलाएं आगे बढ़ना चाहें, तो उनके साथ खड़ी भी होती हैं।

इस कैश क्रेडिट कैंप में कुल 17 आवेदनों को स्वीकृति मिली और 37 लाख रुपये के चेक महिलाओं को वितरित किए गए। यह रकम केवल धन नहीं थी, यह उन हाथों में दी गई श्रद्धा थी, जिन्होंने मेहनत को कभी बोझ नहीं माना। यह उस विश्वास की भेंट थी, जो कहता है कि ग्रामीण महिला केवल सहायता की पात्र नहीं, बल्कि आर्थिक व्यवस्था की सशक्त धुरी है। जब चेक महिलाओं के हाथों में पहुंचे, तो वह क्षण किसी मंदिर में प्रसाद मिलने जैसा था—आंखों में कृतज्ञता, चेहरे पर संतोष और मन में संकल्प। तालुका लाइवलीहुड मैनेजर निरूपा बेन, तालुका A.P.M.T. ऑफिसर गोहिल शक्तिसिंह, क्लस्टर कोऑर्डिनेटर आरडीसी और GGB बैंक के मैनेजर सहित उपस्थित सभी अधिकारी और कर्मचारी इस आयोजन में केवल प्रशासनिक भूमिका में नहीं थे। वे उस सेवा यात्रा के सहयात्री थे, जो ग्रामीण आजीविका सशक्तिकरण को एक आंदोलन का रूप दे रही है। उनके अनुभव, उनकी मौजूदगी और उनका सहयोग इस बात का प्रमाण था कि जब नीति और संवेदना एक साथ चलती हैं, तब परिवर्तन अवश्य होता है।

इस कैंप को लेकर महिलाओं में जो उत्साह देखने को मिला, वह किसी पर्व से कम नहीं था। यह उत्साह इसलिए भी विशेष था क्योंकि इसमें दिखावा नहीं, बल्कि आत्मसम्मान की अनुभूति थी। सखी मंडल की बहनों ने एक-दूसरे को देखा, मुस्कुराईं और शायद मन ही मन यह स्वीकार किया कि वे अब अकेली नहीं हैं। वे एक समूह हैं, एक शक्ति हैं, और उनकी सामूहिक साधना उन्हें आत्मनिर्भरता की ऊंचाइयों तक ले जा सकती है।

NRLM योजना की यह पहल यह भी सिखाती है कि सच्ची भक्ति केवल मंदिरों तक सीमित नहीं होती। जब किसी मां को अपने बच्चों के भविष्य के लिए रोजगार मिलता है, जब किसी महिला को अपने श्रम का सम्मानजनक मूल्य मिलता है, और जब किसी परिवार को आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिलता है—तो वही सच्ची भक्ति है, वही सच्ची सेवा है। गोंडल का यह कैश क्रेडिट कैंप उसी सेवा-भक्ति का जीवंत उदाहरण बन गया।

आज जब देश आत्मनिर्भर भारत की बात करता है, तब गोंडल की ये महिलाएं उस विचार को अपने जीवन में उतारती दिखाई दीं। उनका स्वावलंबन केवल आर्थिक नहीं होगा, बल्कि मानसिक और सामाजिक भी होगा। वे निर्णय लेंगी, जोखिम उठाएंगी, बाजार को समझेंगी और अपने श्रम से समाज की अर्थव्यवस्था में योगदान देंगी। यही वह परिवर्तन है, जो धीरे-धीरे गांवों की तस्वीर बदलता है और राष्ट्र के भविष्य को मजबूत करता है।

यह आयोजन समाप्त हो गया, चेक वितरित हो गए, भाषण पूरे हो गए, लेकिन जो बीज इस दिन बोए गए हैं, वे आने वाले समय में बड़े वटवृक्ष बनेंगे। उन वृक्षों की छाया में न केवल ये महिलाएं, बल्कि उनका परिवार, उनका गांव और उनका समाज भी सुरक्षित महसूस करेगा। गोंडल की धरती ने इस दिन यह साबित कर दिया कि जब सेवा को साधना और योजना को भक्ति बना दिया जाए, तब विकास केवल आंकड़ा नहीं रहता, बल्कि जीवन का उत्सव बन जाता है।

आवारा कुत्तों का कहर, सूरत में फिर लहूलुहान हुआ बचपन

(जीएनएस)। सूरत। तेजी से बढ़ते शहर सूरत में आवारा कुत्तों का आतंक एक बार फिर मासूम जान के लिए जानलेवा साबित हुआ है। लसकाना इलाके के वालक पाटिया क्षेत्र में गुरुवार सुबह एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई, जहां 4 से 5 आवारा कुत्तों के झुंड ने महज साढ़े तीन साल के मासूम बच्चे पर हमला कर दिया। इस हमले में बच्चा गंभीर रूप से घायल हो गया, जिसके सिर और शरीर पर 30 से अधिक टांके लगाने पड़े। घटना के बाद पूरे इलाके में दहशत का माहौल है और नगर निगम की कार्यप्रणाली को लेकर लोगों में गहरा आक्रोश देखने को मिल रहा है।

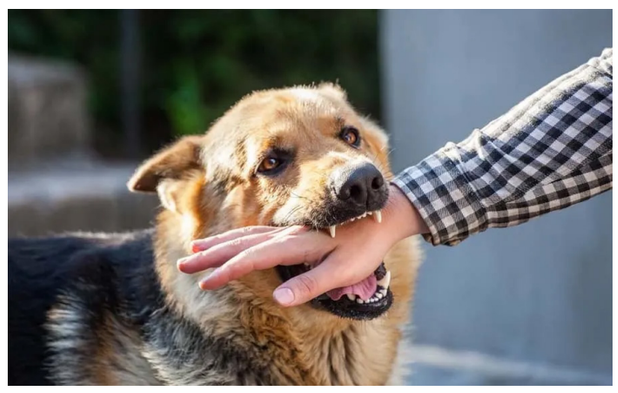

प्राप्त जानकारी के अनुसार, वालक पाटिया स्थित 'करुणेश होम ग्रीन वैली' परिसर में वॉचमैन के रूप में काम करने वाले हिमाल बायक का पुत्र गणेश (उम्र 3.5 वर्ष) रोज़ की तरह सुबह अपने घर के पास खेल रहा था। तभी अचानक 4 से 5 आवारा कुत्तों ने उसे घेर लिया और उस पर हमला कर दिया। कुत्तों ने बच्चे को जमीन पर गिराकर उसके सिर, चेहरे और शरीर के अन्य हिस्सों को बुरी तरह नोचना शुरू कर दिया। अचानक हुए इस हमले से मासूम संभल भी नहीं पाया और दर्द से चीखने लगा।

बच्चे की चीख-पुकार सुनकर आसपास के लोग मौके पर दौड़े। लोगों ने लाठियां और डंडे लेकर कुत्तों को भगाया। स्थानीय निवासियों का कहना है कि यदि कुछ मिनट और देर हो जाती तो बड़ा हादसा हो सकता था और बच्चे की जान भी जा सकती थी। कुत्तों को भगाने के बाद लोगों ने खून से लथपथ हालत में बच्चे को उठाया और तुरंत नजदीकी निजी अस्पताल पहुंचाया।

निजी अस्पताल में डॉक्टरों ने बच्चे की हालत गंभीर देखते हुए प्राथमिक उपचार किया और उसे न्यू सिविल अस्पताल रेफर कर दिया। सिविल अस्पताल में डॉक्टरों ने बताया कि कुत्तों के दांत बच्चे के सिर में काफी गहराई तक धंस गए थे। सिर, पीठ और शरीर के अन्य हिस्सों में गहरे घाव थे, जिन पर कुल 30 से 35 टांके लगाए गए हैं। अत्यधिक खून बहने के कारण बच्चा काफी कमजोर हो गया है और फिलहाल डॉक्टरों की सख्त निगरानी में उसका इलाज जारी है। डॉक्टरों ने संक्रमण के खतरे को देखते हुए एंटी-रेबीज इंजेक्शन और अन्य आवश्यक दवाएं भी दी हैं।

इस घटना ने एक बार फिर सूरत में आवारा कुत्तों की बढ़ती समस्या को उजागर कर दिया है। स्थानीय लोगों का कहना है कि लसकाना, वालक पाटिया और आसपास के औद्योगिक क्षेत्रों में आवारा कुत्तों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। सुबह और शाम के समय बच्चों, बुजुर्गों और काम पर जाने वाले मजदूरों को सबसे ज्यादा खतरा बना रहता है। कई बार शिकायतों के बावजूद नगर निगम की ओर से स्थायी समाधान नहीं किया गया है।

गौरतलब है कि कुछ समय पहले शहर में कुत्तों के हमलों की घटनाएं बढ़ने पर नगर निगम ने बड़े-बड़े दावे किए थे। निगम ने कुत्तों के लिए विशेष 'फीडिंग ज़ोन' बनाने, नसबंदी अभियान तेज करने और आवारा कुत्तों को नियंत्रित करने की योजना की बात कही थी। हालांकि स्थानीय लोगों का कहना है कि कुछ दिनों की कार्रवाई के बाद अभियान ठंडे बस्ते में चला गया और जैसे ही निगरानी कम हुई, कुत्तों का आतंक फिर से बढ़ गया।

घटना के बाद गुस्साए लोगों ने सवाल उठाया है कि आखिर कब तक मासूम बच्चों को ऐसी लापरवाही की कीमत चुकानी पड़ेगी। लोगों का कहना है कि जब तक कोई बड़ा हादसा नहीं होता, तब तक प्रशासन सक्रिय नहीं होता और हादसे के बाद केवल आश्वासन देकर मामला ठंडा कर दिया जाता है। पीड़ित बच्चे के परिवार ने भी प्रशासन से सख्त कार्रवाई और इलाके से आवारा कुत्तों को हटाने की मांग की है। यह घटना न सिर्फ नगर निगम की लचर व्यवस्था पर सवाल खड़े करती है, बल्कि शहर में सुरक्षित वातावरण को लेकर भी चिंता बढ़ाती है। मासूम गणेश इस वक्त अस्पताल के बिस्तर पर जिंदगी और दर्द से जूझ रहा है, जबकि उसके माता-पिता सदमे में हैं। इलाके के लोग उम्मीद कर रहे हैं कि इस घटना के बाद प्रशासन केवल कागजी कार्रवाई तक सीमित न रहकर ठोस कदम उठाएगा, ताकि भविष्य में किसी और मासूम को इस तरह का दर्द न झेलना पड़े।

सोना वायदा में 1456 रुपये का ऊछाल: चांदी वायदा में 16955 रुपये की गिरावट: क्रूड ऑयल वायदा 77 रुपये फिसला

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 129269.47 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 44630.17 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 84637.25 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का फरवरी वायदा 37817 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 3359.46 करोड़ रुपये का हुआ। कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 38425.89 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना फरवरी वायदा 150299 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 151500 रुपये और नीचे में 147000 रुपये पर पहुंचकर, 149244 रुपये के पिछले बंद के सामने 1456 रुपये या 0.98 फीसदी की तेजी के संग 150700 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंचा। गोल्ड-गिनी फरवरी वायदा 1101 रुपये या 0.87 फीसदी औंधकर 125099 रुपये प्रति 8 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-पेटल फरवरी वायदा 134 रुपये या 0.85 फीसदी औंधकर 15576 रुपये प्रति 1 ग्राम पर आ गया। सोना-मिनी फरवरी वायदा 148500 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 150942 रुपये और नीचे में 146900 रुपये पर पहुंचकर, 207 रुपये या 0.14 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 149750 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-टेन फरवरी वायदा प्रति 10 ग्राम 154800 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 155949 रुपये और नीचे में 146605 रुपये पर पहुंचकर, 155962 रुपये के पिछले बंद के सामने 1915 रुपये या 1.23 फीसदी औंधकर 154047 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया।

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा सत्र के आरंभ में 258096 रुपये के भाव पर खूलकर, 258096 रुपये के दिन के उच्च और 239000 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 268850 रुपये के पिछले बंद के सामने 16955 रुपये या 6.31 फीसदी लुढ़ककर 251895 रुपये प्रति किलो बोला गया। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 17759 रुपये या 6.42 फीसदी की गिरावट के साथ 259031 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 17919 रुपये या 6.47 फीसदी गिरकर 259000 रुपये प्रति किलो के

कमोडिटी वायदाओं में 44630.17 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 84637.25 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 38425.89 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 37817 पॉइंट के स्तर पर

भाव पर पहुंचा।

मेटल वर्ग में 4299.20 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा फरवरी वायदा 9.6 रुपये या 0.77 फीसदी गिरकर 1235 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि जस्ता फरवरी वायदा 1.75 रुपये या 0.54 फीसदी औंधकर 319.95 रुपये प्रति किलो पर आ गया। इसके सामने एल्यूमीनियम फरवरी वायदा 1.4 रुपये या 0.45 फीसदी औंधकर 307.5 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा फरवरी वायदा 85 पैसे या 0.45 फीसदी की नरमी के साथ 189.8 रुपये प्रति किलो पर आ गया।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 1899.61 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 5798 रुपये के भाव पर खूलकर, 5831 रुपये के दिन के उच्च और 5750 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 77 रुपये या 1.31 फीसदी गिरकर 5814 रुपये प्रति बैरल हुआ। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी फरवरी वायदा 76 रुपये या 1.29 फीसदी गिरकर 5816 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा।

इनके अलावा नैचुरल गैस फरवरी वायदा 323.6 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 323.7 रुपये और नीचे में 308.6 रुपये पर पहुंचकर, 315.3 रुपये के पिछले बंद के सामने 2.4 रुपये या 0.76 फीसदी औंधकर 312.9 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर आ गया। जबकि नैचुरल गैस-मिनी फरवरी वायदा 2.4 रुपये या 0.76 फीसदी औंधकर 313 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर आ गया।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल फरवरी वायदा 981 रुपये पर खूलकर, 2.4 रुपये या 0.24 फीसदी बढ़कर 983 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 20908.11 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 17517.77 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 3453.82 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 445.59 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 27.39 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 372.40 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 500.66 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1388.35 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 9509 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 66614 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 31231 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 421576 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 52535 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 8449 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 21919 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 61508 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 17056 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 15615 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स फरवरी वायदा 37957 पॉइंट पर खूलकर, 38400 के उच्च और 37328 के नीचले स्तर को छूकर, 1313 पॉइंट घटकर 37817 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल फरवरी 5800 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 51.2 रुपये की गिरावट के साथ 244.7 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस फरवरी 320 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 50 पैसे के सुधार के साथ 29.15 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 150000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 376.5 रुपये की गिरावट के साथ 10374.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 300000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 6244 रुपये की गिरावट के साथ 14307.5 रुपये हुआ। तांबा फरवरी 1300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 5.75 रुपये की गिरावट के साथ 36.99 रुपये हुआ। जस्ता फरवरी 350 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 1.31 रुपये की गिरावट के साथ 2.5 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल फरवरी 5800 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 27.2 रुपये की बढ़त के साथ 232.3 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस फरवरी 310 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 30 पैसे के सुधार के साथ 27.25 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 150000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 189.5 रुपये की बढ़त के साथ 7778.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 250000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 7763.5 रुपये की बढ़त के साथ 30250 रुपये हुआ। तांबा फरवरी 1200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 63 पैसे के सुधार के साथ 37.61 रुपये हुआ। जस्ता फरवरी 310 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 53 पैसे की नरमी के साथ 7 रुपये हुआ।